साहिल और समन्दर

ख़्वाजा अहमद अब्बास

H
813.31
Ab 19 S

H
813.31
Ab19S

साहिल और समन्दर

सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली-७

Sahil aur Samandar

साहिल और समन्दर

Khwaja Ahmed Abbas

ख्वाजा अहमद अब्बास

Library IIAS, Shimla
H 813.31 Ab 19 S
00064350

64359
6.8.82

H
813.31
Ab 19 S

© ख्वाजा अहमद अब्बास

प्रथम संस्करण : १९८२
मूल्य : १५ रुपये
प्रकाशक : सन्मार्ग प्रकाशन
१६, यू. बी. बैंग्लो रोड, दिल्ली-११०००७
मुद्रक : कमल प्रेस, गांधीनगर द्वारा
प्रगति प्रेस, शाहदरा, दिल्ली-११००३२

दो शब्द

एक मशहूर अमरीकन नॉवेलिस्ट ने कहा है कि, 'आइन्दा ज़माने में नॉवेल स्क्रीनप्ले के अन्दाज़ में लिखे जायेंगे', यानि सिर्फ़ एक्शन और डायलॉग ही होंगे उनमें !

सोवियत में एक अदबी फ़िल्मी सनफ़ है जिसे 'लिटरेरी सिनेरियो' कहते हैं, यानि स्क्रीनप्ले को एक साहित्यिक हैसियत दे दी गयी है। 'लिटरेरी सिनेरियो' में कोई तकनीकी भाषा इस्तेमाल नहीं की जाती। उनका मक़सद ये है कि डायरेक्टर, फ़ोटोग्राफ़र और फ़िल्म के दूसरे तकनीकी लोगों को कहानी पढ़ाकर उसके मरकज़ी ख़याल का पूरा अन्दाज़ हो जाये। क्या डायलॉग बोलने हैं वो मालूम हो जायें। उसको फ़िल्मी जामा पहनाने के लिए क्या टेक्नीक इस्तेमाल की जायेगी उसका फ़ैसला तो कैमरा-मैन और दूसरे तकनीकी लोग करेंगे लेकिन एक लेखक की हैसियत से लिखने वाले की क्या ज़रूरत हैं, वह क्या दिखाना चाहता है और कैसे दिखाना चाहता है वह सब 'लिटरेरी सिनेरियो' में मौजूद होना चाहिए।

यह सही है कि आज के मशीनी दौर में किसी को फ़ुरसत नहीं है कि दो-तीन सौ पृष्ठ पात्रों की मनोवैज्ञानिक उलझनों पर सर्फ़ करे—मौसम के हाल पर या माहौल की तफ़सील को बयान करने में करे। न ही पढ़ने वालों को फ़ुरसत है, न लिखने वालों को।

इसलिए मैंने पिछले कुछ नॉविलों से ये नयी तकनीक इस्तेमाल की है और ये पसन्द भी की गयी है। इसलिए मैंने अपना यह नॉवेल 'साहिल और समन्दर' लिटरेरी सिनेरियो की फ़ॉर्म में लिखा है। कहाँ तक कामयाब हुआ हूँ, इसका फ़ैसला अपने पढ़ने वालों पर छोड़ता हूँ।

इसकी फ़िल्म अभी तक नहीं बनी है। लेकिन कभी भी बन सकती है।

फ़िल्म और साहित्य के बीच में जो फ़ासला है उसको दूर करने की ये मेरी कोशिश है, मगर आख़िरी कोशिश नहीं है। उम्मीद है इस तकनीक को दूसरे लेखक भी अपनायेंगे, इसको सँवारेंगे और इसकी साहित्यिक हैसियत मनवाकर रहेंगे।

ख़्वाजा अहमद अब्बास

१
काला आदमी

एक जहाज़ पर से कोयला उतारा जा रहा था।

कोयला उतारने के काम में लगे हुए मज़दूरों के चेहरे सियाह हो गये थे।

उनमें से एक जिसका शरीर कमर तक नंगा था, गोपाल था।

उसका चेहरा, हाथ और सीना, सब कोयले की गर्द से सियाह थे— सिर्फ़ उसकी आँखें जलते हुए कोयलों की तरह दहक रही थीं, जो उसे दूसरे मज़दूरों से नुमाया करती थीं।

ये कमरतोड़ काम था— जो पसीना गोपाल के चेहरे और शरीर से बह रहा था वह भी सियाह ही था।

सायरन की आवाज़ पर सारे मज़दूरों ने अपने औज़ार रख दिये और जाने लगे, लेकिन गोपाल नहीं गया। उसने अपना काम जारी रखा। कांट्रेक्टर के आदमी ने उससे पूछा कि वह इतनी मेहनत क्यों कर रहा है? गोपाल ने जवाब दिया कि वह कमाना चाहता है ताकि वह रात को 'सेलर ब्वाय' नाइट क्लब जा सके।

'सुना है वहाँ साली मेमें नंगा नाचती हैं!'

अमर, जो कांट्रेक्टर का क्लर्क था, रुपये की गिनती कर रहा था। फिर गोपाल के ओवरटाइम के रुपये देते हुए, ज़रा आश्चर्य प्रकट करते हुए बोला, 'अरे भई, तुम इतनी सख्त मेहनत क्यों करते हो?'

'अमर भैया, साली मेहनत मैं इसलिए करता हूँ क्योंकि मैं अमीर आदमी का बेटा नहीं हूँ, लेकिन मुझे ग़रीबों जैसी ज़िन्दगी बिताना अच्छा नहीं लगता। आज मैंने ओवरटाइम इसलिए किया है कि 'सेलर ब्वाय' बार और नाइट क्लब में पीने का मज़ा लेना चाहता हूँ। आओ मेरे साथ। हिसाब-किताब का रजिस्टर फेंको और मज़े उड़ाओ। मैं कहता हूँ तुम एक बार भी रोज़ी को देख लोगे तो तुम्हारे जैसा धर्मात्मा भी फ़िसल पड़ेगा।'

अमर आदर्शवादी था। गोपाल की बातचीत से प्रभावित नहीं हुआ, लेकिन रंजीत, जो उस सेक्शन का मैनेजर था, गोपाल की बात को बड़े ग़ौर से सुन रहा था। गोपाल के चले जाने के बाद उसने अमर से पूछा, 'ये काले चेहरे वाला मज़दूर कौन है ?'

'उसका नाम गोपाल है—वो काले चेहरे वाला नहीं, बल्कि गोरा-चिट्टा है, बिलकुल एक अंग्रेज़ की तरह।'

गोपाल चाल के सामने बस्ती के नल पर नहा रहा था। उसका चेहरा साबुन के झाग से भरा हुआ था। जब उसने अपना चेहरा धोया और तौलिये से उसको रगड़ा तो उसका असली रंग ज़ाहिर हो गया।

वह एक अच्छे नाक-नक्श वाला ख़ूबसूरत और मज़बूत बाज़ुओं वाला नौजवान था।

उसकी खोली की दीवारों पर लड़कियों की रंगीन तस्वीरें चिपकी हुई थीं।

गोपाल ने नीले रंग की जीन्ज़ और एक स्मार्ट और चुस्त जैकिट (जो बाहर के किसी मुल्क से आयी लगती थी) पहनी। फिर एक बाँका हैट अपने सर पर इस तरह से लगाया जैसे औबाश लोग लगाते हैं—और फिर अपने-आप को आइने में देखा और ख़ुद-ही-ख़ुद मुस्करा दिया।

सेलर ब्वाय बार और नाइट क्लब रोज़मर्रा की तरह जगमगा रहा था।

सेन्ट्रल गेट पर सेलर ब्वाय का नियोन साइन जगमग कर रहा था। एक दूसरा साइन नज़र आया—'स्पेशल शो टू नाइट'—टिकट बीस रुपये।

जब गोपाल ने अपनी जेब से पैसे निकाले तो केवल बारह रुपये निकले। दरबान ने उसे अन्दर जाने से रोक दिया और गोपाल नाउम्मीद होकर सोचने लगा कि वह क्या करे। इतने में पर्दे के पीछे से एक नाज़ुक हाथ बाहर आया। इससे पहले कि वह सोच सके कि यह क्या हो रहा है, उसे अन्दर खींच लिया गया।

ये रोज़ी थी जिसने उसे अन्दर खींच लिया था।

अब वह एक छोटे से भरे हुए बार और नाइट क्लब के अन्दर था।

'साली, हरामज़ादी—मुझे इस तरह घसीटती है—क्या तू समझती है मैं बटाटे की बोरी हूँ?'

'नहीं टमाटर की', उसके गालों पर चुटकी लेते हुए रोज़ी बोली, 'जब तुम आना चाहो तो मेरा नाम उनको बता देना। फिर कोई दिक्कत नहीं होगी।'

'मैं लड़कियों से ख़ैरात नहीं लेता—मैं उन्हें रुपया देता हूँ—ये लो', वह बारह रुपये उसके हवाले करते हुए कहता है, 'यही सब इस वक़्त मेरे पास हैं। मैं तुम्हारा सिर्फ़ आठ रुपये का क़र्ज़दार हूँ।'

'लेकिन पीने के लिए रुपया कहाँ है तुम्हारे पास? इससे एक बियर की बोतल आ जायेगी।'

'मिस रोज़ी! मिस रोज़ी, नाच के लिए तैयार हो जाओ', एक लड़के ने ऐलान किया।

गोपाल ने कहा, 'तुम जाओ रोज़ी। पीने का इन्तज़ाम मैं ख़ुद कर लूँगा। तुम ज़रा इन्तज़ार करो और फिर देखो तमाशा।'

'अच्छा फिर मिलूँगी', रोज़ी बोली और गोपाल की तरफ़ अपनी उँगली के इशारे से एक बोसा फेंकती हुई अन्दर चली गयी।

गोपाल बार के अन्दर गया जहाँ बहुत-से विदेशी ऊँचे स्टूलों पर बैठे कई तरह की शराबें पी रहे थे।

उसने उनमें से एक तगड़े आदमी के शाने पर थपकी लगायी। 'हाय जौनी' कहकर उसने मुसाफ़े के लिए हाथ बढ़ाया। विदेशी ने उससे अपना

हाथ मिलाया। उसने कहा, 'लेकिन तुम ग़लती पर हो। मेरा नाम पीटर है जौनी नहीं—तुम यहाँ क्या करते हो ?'

गोपाल उस विदेशी का हाथ ज़ोर से दबा रहा था—वह तैश में आ गया और बोला, 'वाइज़ गाइ !'

उसने अपने हाथ के पट्ठे को दिखाते हुए कहा, 'क्या हमसे मुक़ाबला करेगा ?'

'यक़ीनी !' गोपाल बोला, 'मैं एक बोतल बियर की शर्त लगाता हूँ। तुम जीत नहीं सकते।'

'मुझे मंज़ूर है—बियर की एक बोतल', विदेशी ने कहा।

गोपाल ने अपनी सीधी कोहनी को काउंटर पर रखा। विदेशी ने भी अपनी कोहनी को टिका दिया।

बार में बैठे हुए लोग उनके गिर्द जमा हो गये। उनमें कुछ विदेशी भी थे। कुछ गोपाल की तरफ़दारी कर रहे थे और कुछ उस विदेशी की। दोनों एक-दूसरे को हराने के लिए अपनी पूरी ताक़त लगा रहे थे।—आखिरकार गोपाल जीत गया। और ठीक उस वक़्त जब बियर का जाम उसकी तरफ़ बढ़ाया गया तो, आर्केस्ट्रा का म्यूज़िक गूँज उठा। रोशनियाँ मद्धम हो गयीं। रोशनी का एक दायरा कैबरे स्टेज पर गिरा और उसमें रोज़ी नमूदार हुई—ऐसे बेबाक लिबास में, जो उसके जिस्म को और ज़्यादा नुमाया कर रहा था।

उसकी आँखें गोपाल पर थीं।

गोपाल ने अपना बियर का जाम ऊपर उठाया, ये जताने के लिए कि आख़िर उसने अपनी शराब का मुफ़्त इन्तज़ाम कर ही लिया।

वह उसकी तरफ़ देखकर मुस्करायी—और फिर गाना और नाचना शुरू कर दिया।

ये एक तड़पाने वाला 'पॉप' गीत था जिसका बुनियादी ख़याल ये था कि 'खाओ पियो और मौज उड़ाओ क्योंकि कल हम मर जायेंगे'—एक फ़लसफ़ा जो सब मल्लाहों के लिए दिलकश होता है।

जब गाना ख़त्म हो गया तो लोगों ने ख़ूब तालियाँ बजायीं। उनमें गोपाल भी था।

गोपाल की तालियों का जवाब रोज़ी ने इस तरह दिया कि उसने उसकी तरफ़ एक बोसा लहरा दिया। रोज़ी की बोसा लहराने वाली अदा को उस विदेशी मल्लाह ने देख लिया जिसके हाथ को गोपाल ने दबाया था और वह यह समझ बैठा कि रोज़ी ने उसी की तरफ़ इशारा किया है।

'श्योर बेबी, श्योर !' उसने उठते हुए रोज़ी की तरफ़ बाँहें फैलाते हुए कहा।

रोज़ी अचम्भे में पड़ गयी क्योंकि उसने इशारा तो गोपाल की तरफ़ किया था।

'सॉरी !' वह कहती है, 'मेरा मतलब इसकी तरफ़ है। ये मेरा ब्वाय फ्रेंड है।'

'कौन ?' विदेशी मल्लाह पूछ बैठा, 'ये ब्लॅडी इंडियन ?'

जब गोपाल ने ये सुना तो उस तगड़े मोटे-ताज़े मल्लाह की गर्दन के पट्ठे को पकड़ लिया और उसके एक मुक्का रसीद किया।

वह विदेशी मल्लाह भी तगड़ा था, उठ खड़ा हुआ और उसने जवाबी हमला किया। दोनों में ख़ूब लड़ाई हुई—ख़ूब घूँसे चले। आख़िरकार विदेशी मल्लाह का साँस फूल गया और उसने अपनी हार मान ली। फिर शराब पिये हुए मल्लाह ने माफ़ी माँगी और बार-बार कहा, 'सॉरी बिरादर, तुम मेरे भाई हो। तुम हरगिज़ ब्लॅडी हिन्दुस्तानी नहीं हो सकते।'

आख़िरकार गोपाल ने रोज़ी को ड्रेसिंग रूम में आने को कहा। रोज़ी मुस्कराकर उसकी बाँहों में बाँहें डाले ड्रेसिंग रूम में आ गयी। दोनों ने एक-दूसरे की आँखों में आँखें डालकर देखा। रोज़ी गोपाल के कन्धे से लग गयी और अपनी बाँहों का हार गोपाल के गले में डालते हुए बोली, 'गोपाल, माई डार्लिंग !'

जब वह गोपाल के गले में बाँहें डालने लगी तो उसने देखा कि गोपाल की कमीज़ कन्धे से फटी हुई है।

'अपनी शर्ट तो देखो'—वो इशारा करते हुए बोली, 'बेचारा—कोई बीवी नहीं फटे हुए शर्ट को रफ़ू करने के लिए। आओ मैं तुम्हारी कमीज़ को सीं दूँगी।'

रोज़ी नाच-गाने के कपड़ों के ढेर के नीचे से सुई-धागा उठाती है और

गोपाल की फटी हुई कमीज़ को सींने लगती है।

गोपाल को रोज़ी का अन्दाज़ अच्छा लगा लेकिन उसने आह भरकर कहा, 'मेरी ज़िन्दगी के लिबास में बहुत-से बखिए उधड़े हुए हैं रोज़ी! आखिर तुम किस-किस को रफ़ू करोगी?'

रोज़ी गोपाल की कमीज़ के उधड़े हुए बखिए को सुई से सीं देने के बाद उसके क़रीब आ गयी और उससे लिपट गयी। वे इस वक़्त एक-दूसरे के बहुत क़रीब थे। मदहोशी के आलम में रोज़ी की आँखें इस वक़्त बन्द थीं। ऊँची ऐड़ी का जूता उसने पैरों से गिरा दिया। अब गोपाल के हाथ ने रोज़ी के फ्राक के ज़िप को खोलना शुरू कर दिया। इससे पहले कि गोपाल पूरा ज़िप खोले, रोज़ी ने कहा, 'गोपाल, मुझे अपनी बीवी बना लो ताकि मैं हमेशा-हमेशा तुम्हारी देखभाल कर सकूं।'

शादी के नाम पर गोपाल खिंच-सा गया जैसे उसको जाल में फँसाया जा रहा हो। अधखुले ज़िप पर गोपाल के हाथ रुक गये। ठीक उसी वक़्त डौक का सायरन ज़ोर से बजना शुरू हुआ। सायरन की तेज़ आवाज़ से रोज़ी चौंकी और गोपाल को अच्छा बहाना मिल गया वहाँ से खिसक जाने का।

गोपाल ने फ्राक के ज़िप को फिर ऊपर चढ़ा दिया।

रोज़ी की बाँहों से अपने-आप को अलग करते हुए गोपाल ने रोज़ी के गाल को थपथपाया और बोला, 'किसी और वक़्त सही बेबी। मेरी नाइट शिफ़्ट का वक़्त हो चुका है।'

और गोपाल सिसकियाँ भरती रोज़ी को छोड़कर अकड़ता हुआ वहाँ से चला गया। रोज़ी ने अपने-आप को कपड़ों के ढेर पर पटक दिया—निराश होकर वह हिचकियाँ लेने लगी।

२

मेम साहब

डौक से आज फिर कोयला उतारा जा रहा था। कोयला उतारने वाले मज़दूरों में गोपाल भी था जो एक बहुत बड़ी टोकरी में कोयला भर-भरकर एक ट्रक में डाल रहा था। जैसे ही वह टोकरी का कोयला ट्रक में डालकर मुड़ा तो एकदम भौंचक्का-सा रह गया।

सामने सफ़ेद ब्लाउज़ और सफ़ेद साड़ी पहने एक नौजवान ख़ूबसूरत लड़की बिखरे हुए कोयले की काली ज़मीन पर चली आ रही है। काली ज़मीन पर वह लड़की ऐसी लग रही थी जैसे रेगिस्तान की रेतीली ज़मीन पर कमल का फूल खिल उठा हो।

लड़की बड़े इतमिनान से आगे बढ़ी चली जा रही थी। उसे ये भी पता न था कि एक तरफ़ 'खतरा—क्रेन से होशियार' का बोर्ड लगा हुआ है। उसने तो सिर्फ़ इतना देखा कि काला भुसंड एक मज़दूर अपने हाथ के इशारे से जल्दी-जल्दी अपनी तरफ़ आने को कह रहा है। वह उस आदमी का इशारा न समझ सकी। इतने में एक दूसरे मज़दूर ने उस लड़की को हाथ पकड़कर अपनी तरफ़ खींच लिया और वह ज़मीन पर गिर गयी। वह काला मज़दूर भी उसके ऊपर गिर गया—यह मज़दूर कोई और नहीं गोपाल था।

उसका काला चेहरा, उसके काले-काले हाथ, उसका काला शरीर, कमर तक नंगा, उसके गन्दे और घिनावने कपड़े। लड़की उसके मुँह पर थप्पड़ मारने ही वाली थी कि उसने देखा क्रेन का एक बड़ा खौफ़नाक जबड़ा उस जगह आकर गिरा जहाँ से गोपाल ने हाथ पकड़कर उसे खींचा

गोपाल की फटी हुई कमीज़ को सींने लगती है।

गोपाल को रोज़ी का अन्दाज़ अच्छा लगा लेकिन उसने आह भरकर कहा, 'मेरी ज़िन्दगी के लिवास में बहुत-से वखिए उधड़े हुए हैं रोज़ी ! आखिर तुम किस-किस को रफ़ू करोगी ?'

रोज़ी गोपाल की कमीज़ के उधड़े हुए वखिए को सुई से सीं देने के वाद उसके क़रीब आ गयी और उससे लिपट गयी। वे इस वक़्त एक-दूसरे के वहुत क़रीब थे। मदहोशी के आलम में रोज़ी की आँखें इस वक़्त बन्द थीं। ऊँची ऐड़ी का जूता उसने पैरों से गिरा दिया। अब गोपाल के हाथ ने रोज़ी के फ्राक के ज़िप को खोलना शुरू कर दिया। इससे पहले कि गोपाल पूरा ज़िप खोले, रोज़ी ने कहा, 'गोपाल, मुझे अपनी वीवी बना लो ताकि मैं हमेशा-हमेशा तुम्हारी देखभाल कर सकूँ।'

शादी के नाम पर गोपाल खिंच-सा गया जैसे उसको जाल में फँसाया जा रहा हो। अधखुले ज़िप पर गोपाल के हाथ रुक गये। ठीक उसी वक़्त डौक का सायरन ज़ोर से बजना शुरू हुआ। सायरन की तेज़ आवाज़ से रोज़ी चौंकी और गोपाल को अच्छा बहाना मिल गया वहाँ से खिसक जाने का।

गोपाल ने फ्राक के ज़िप को फिर ऊपर चढ़ा दिया।

रोज़ी की बाँहों से अपने-आप को अलग करते हुए गोपाल ने रोज़ी के गाल को थपथपाया और बोला, 'किसी और वक़्त सही वेवी। मेरी नाइट शिफ़्ट का वक़्त हो चुका है।'

और गोपाल सिसकियाँ भरती रोज़ी को छोड़कर अकड़ता हुआ वहाँ से चला गया। रोज़ी ने अपने-आप को कपड़ों के ढेर पर पटक दिया—निराश होकर वह हिचकियाँ लेने लगी।

२

मेम साहब

डौक से आज फिर कोयला उतारा जा रहा था। कोयला उतारने वाले मज़दूरों में गोपाल भी था जो एक बहुत बड़ी टोकरी में कोयला भर-भरकर एक ट्रक में डाल रहा था। जैसे ही वह टोकरी का कोयला ट्रक में डालकर मुड़ा तो एकदम भौंचक्का-सा रह गया।

सामने सफ़ेद ब्लाउज़ और सफ़ेद साड़ी पहने एक नौजवान ख़ूबसूरत लड़की बिखरे हुए कोयले की काली ज़मीन पर चली आ रही है। काली ज़मीन पर वह लड़की ऐसी लग रही थी जैसे रेगिस्तान की रेतीली ज़मीन पर कमल का फूल खिल उठा हो।

लड़की बड़े इतमिनान से आगे बढ़ी चली जा रही थी। उसे ये भी पता न था कि एक तरफ़ 'खतरा—क्रेन से होशियार' का बोर्ड लगा हुआ है। उसने तो सिर्फ़ इतना देखा कि काला भुसंड एक मज़दूर अपने हाथ के इशारे से जल्दी-जल्दी अपनी तरफ़ आने को कह रहा है। वह उस आदमी का इशारा न समझ सकी। इतने में एक दूसरे मज़दूर ने उस लड़की को हाथ पकड़कर अपनी तरफ़ खींच लिया और वह ज़मीन पर गिर गयी। वह काला मज़दूर भी उसके ऊपर गिर गया—यह मज़दूर कोई और नहीं गोपाल था।

उसका काला चेहरा, उसके काले-काले हाथ, उसका काला शरीर, कमर तक नंगा, उसके गन्दे और घिनावने कपड़े। लड़की उसके मुँह पर थप्पड़ मारने ही वाली थी कि उसने देखा क्रेन का एक बड़ा खौफ़नाक जबड़ा उस जगह आकर गिरा जहाँ से गोपाल ने हाथ पकड़कर उसे खींचा

था।

क्रेन ने उस जगह अपना जबड़ा खोलकर कई मन कोयला उगल दिया।

कुछ क्षण के लिए वह खूबसूरत लड़की और काला भुसंड गोपाल ज़मीन पर एक-दूसरे की बाँहों में जकड़े हुए थे। उनके चेहरे एक-दूसरे के इतने क़रीब थे कि गोपाल के दिमाग़ में एक ख़ुशबू घुसी चली जा रही थी, जो शायद लड़की के बालों में लगे हुए ख़ुशबू के तेल की थी या फिर लड़की के जवान जिस्म की। और सफ़ेद साड़ी वाली लड़की को एक मर्द के पास से कोयले की गर्द और पसीने की बू आ रही थी—और उसकी साँस की गर्मी भी महसूस हो रही थी।

अब वह उठा और तेज़ी से उस लड़की को उठाया। लड़की के सफ़ेद हाथों पर, बाज़ुओं पर और उसके सफ़ेद कपड़ों पर काले धब्बे पड़ गये थे—यहाँ तक कि उसका चेहरा भी काला हो गया था।

लोग—मज़दूर, क्लर्क, सुपरवाइज़र, अमर, रंजीत—इधर-उधर से दौड़ पड़े।

उन लोगों के क़रीब आने से पहले ही गोपाल ने लड़की से कहा, 'ए मेम साहब, मरना है तो अपने घर में ज़हर खाकर मरो—यहाँ क्या झक मारने आयी हो ?'

'तुम बड़े बदतमीज़ हो जी—इतना भी नहीं जानते शरीफ़ लड़कियों से किस तरह बात करते हैं ?'

उसकी आँखों ने लड़की के जिस्म की तरफ़ देखा जो कपड़ों के अन्दर से नुमाया हो रहा था, 'कपड़ों के परदे में सब लड़कियाँ एक जैसी ही होती हैं मेम साहब !'

इससे पहले कि लड़की कुछ जवाब दे सके, मज़दूर लोगों ने उन्हें घेर लिया। उस लड़की से सब बड़ी इज़्ज़त से पेश आये।

अमर ने कहा, 'शाबाश गोपाल, तुमने बड़ी होशियारी दिखायी।'

लेकिन दूसरे भी साथ ही बोल उठे, 'मिस साहब, चोट तो नहीं लगी ?'

'मिस साहब, इस वक़्त तो भगवान ने आपको बचा लिया…'

'मिस मालती', रंजीत बोला, 'आप ख़ैरियत से तो हैं ? मालिक को मैंने ख़बर भिजवा दी है, वह आते ही होंगे।'

अब गोपाल को मालूम हो गया कि उस लड़की का नाम मालती है और जिस कम्पनी में वह काम करता है उसके मालिक से उसका घनिष्ठ सम्बन्ध है।

ठीक उसी वक़्त एक सुन्दर कार बड़ी तेज़ी से वहाँ आकर रुकी।

लगभग पैंतालीस वरस की उम्र का एक आदमी—जो काला सूट पहने था, जिसके बाल और मूँछों का रंग खिचड़ी जैसा था, जिसके चेहरे से होशियारी ज़ाहिर होती थी—और जिसके चश्मे के सुनहरे फ्रेम के पीछे से मक्कार आँखें नज़र आ रही थीं—एक छड़ी की मदद से गाड़ी से उतरा और तेज़ी से मालती के क़रीब आया…।

'सलाम मालिक !'

'नमस्ते मालिक !'

मज़दूरों ने सलाम किया और पीछे हट गये।

वह मालती के पास आया और उसे गले से लगा लिया।

'भगवान ने बड़ी कृपा की है बेटी कि तुम्हारी जान बच गयी—(मज़दूरों से)—चलो-चलो अपना काम करो—(क्रेन आपरेटर से) क्रेन भी चालू करो, काम बन्द नहीं होना चाहिए—अमर, चलो अपने दफ़्तर में—(मालती से) चलो बेटी—रंजीत, तुम भी आओ मेरे साथ।'

मालती कार में बैठ गयी। बैठते ही उसने पीछे पलटकर गोपाल की तरफ़ देखा—फिर वह आदमी भी कार में बैठ गया और रंजीत ड्राइवर के पास वाली सीट पर बैठ गया।

अपने पीछे गर्द का ग़ुबार छोड़ती हुई कार वहाँ से चल दी।

लेकिन गोपाल उसी जगह खड़ा रहा और उस कार को उस वक़्त तक देखता रहा जब तक वो उस कोयला कम्पाउंड से बाहर नहीं चली गयी। फिर वह कोयला ढोने के लिए कोयले के ढेर की तरफ़ चल दिया।

अमर उसके पीछे चिल्लाते हुए दौड़कर आया, 'गोपाल ! ओ गोपाल !!'

'क्या हुआ, अमर भैया ? तुम तो ऐसे चिल्ला रहे हो जैसे कहीं आग

लग गयी हो !'

'यही समझो——बाबू भाई ने तुम्हें बुलाया है ।'

'बाबू भाई !'

'हाँ भई, बाबू भाई—हमारे मालिक जो अभी-अभी अपनी भतीजी को लेने आये थे ।'

'तो वह छोकरी उनकी भतीजी थी !'

'हाँ भई, मगर अब जल्दी करो । मुझे हुक्म मिला है कि तुम्हें इसी वक़्त जीप में भेजूँ ।'

'लगता है, भतीजी ने मेरी शिकायत कर दी है ?—अहसान फ़रामोश कहीं की—एक तो साली की जान बचायी···।'

'देख गोपाल, मालिक के पास जाना है तो ज़बान सँभालकर बात करना···।'

'और अगर मैं न जाऊँ तो ?'

'जब बाबू भाई किसी को बुलवाते हैं तो वह इन्कार नहीं कर सकता ।'

एक जीप तेज़ी से बेलार्ड स्टेट की बिल्डिंग के सामने आकर रुकी और उसके ब्रेक लगने की आवाज़ आयी ।

गोपाल नीचे कूद गया ।

रंजीत उसका इन्तज़ार कर रहा था—उसने अपनी घड़ी की तरफ़ देखा ।

'बड़ी देर लगा दी तुमने ?' उसने एतराज़ किया, 'मालिक अब और बिगड़ेंगे—चलो मेरे साथ !'

वे बिल्डिंग में चलने लगे ।

बाबू भाई के दफ़्तर के लम्बे कारीडोर से गुज़रते हुए वे एक कमरे के सामने पहुँचे जिसके दरवाज़े पर पीतल की एक प्लेट पर 'बाबू भाई' लिखा हुआ था ।

रंजीत ने दरवाज़े की तरफ़ इशारा किया, 'जाओ अन्दर ।'

'मैं ?—अकेला ?' गोपाल कुछ घबराया ।

'चलो जी', गोपाल ने हिम्मत करके कहा, 'ज़्यादा-से-ज़्यादा मालिक साला निकाल ही तो देगा !' फिर उसने अपने मुँह को लगाम दी ताकि मुँह से कोई गाली न निकल सके और फिर उसने दरवाज़े को धक्का दिया और अन्दर चला गया।

बावू भाई का ऑफ़िस एक डिक्टेटर के ऑफ़िस की तरह था।

वह उस कमरे के आखिरी किनारे पर बैठा था ताकि दूसरे आदमियों को मालिक तक पहुँचने के लिए लम्बा रास्ता तै करना पड़े। उसी दौरान बावू भाई आने वाले का जायज़ा ले सकता था।

गोपाल ने डरते हुए उसके पास जाकर सलाम किया।

गोपाल को परेशान करने के लिए बावू भाई मेज़ पर रखे हुए कागज़ों को देखने लगा ताकि गोपाल इन्तज़ार कर सके और ये जान सके कि उसको क्यों बुलाया गया है ? गोपाल ने एक-दो बार खाँसकर मालिक को अपनी तरफ़ मुतवज्जा किया।

आखिरकार बावू भाई ने उसकी तरफ़ देखा और पूछा, 'क्या तुम्हें सर्दी लग गयी है ?'

'नहीं साहब।'

'खाँसी ? ब्रोन्काइटिस ? या दमा ?'

'नहीं साहब।'

'फिर तुम खाँस क्यों रहे हो ?'

'मैं माफ़ी चाहता हूँ साहब।'

इसके बाद बावू भाई ने जो कहा तो गोपाल को इतमिनान-सा हुआ, 'हम तुम्हारे अहसानमन्द हैं कि मालती की जान बचाने के लिए तुमने इतना कुछ किया। लगता है तुम बहुत बहादुर हो ?'

'मैंने वही किया जो मुझे करना चाहिए था। मुझे ख़ुशी है कि मैं मिस मालतीजी के काम आया।'

'हम नहीं चाहते कि तुम जैसा समझदार आदमी बोझ उठा-उठाकर अपनी जिन्दगी बरबाद करे—ये तो कुलियों का काम है। हम तुमको एक

हलका मगर ज़्यादा ज़िम्मेदारी वाला काम देंगे और तुम्हारी पगार भी दुगुनी हो जायेगी—कहो मंज़ूर है ?'

'हाँ साहब, पगार डबल हो जायेगी तो मैं आपके लिए हर काम करने को तैयार हूँ।'

'तुम मेरे लिए नौकरी नहीं करते। कम्पनी के लिए करते हो। और कम्पनी क्या है ? ये मजदूर हैं तुम जैसे—तुम लोग ही कम्पनी हो—कल से तुम सुपरवाइज़र हो। तुमको ये देखना होगा कि मज़दूर काम करते रहें और वक़्त बरबाद न करें।'

'आप जैसा कहेंगे वैसा ही करूँगा साहब।'

'एक बात और—आज हमको जहाज़ पर से अनाज उतारना है। अनाज के उन चोरों से होशियार रहो जो हमारी सरकार को और ग़रीब जनता को इस अनाज से महरूम करते हैं। बेईमानी एक बीमारी है जो सारे मुल्क में फैली हुई है। तुमको स्पेशल बोनस दिया जायेगा अगर तुम क़िसी अनाज चोर को पकड़ोगे।'

'मैं अपनी ओर से पूरी कोशिश करूँगा साहब।'

'मुझे मालूम था—हाँ, तो अब तुम्हें ये मंज़ूर है ? जब ज़रूरत हुआ करेगी रंजीत तुम्हें हमारा हुक्म सुना दिया करेगा, अब तुम जा सकते हो।'

'शुक्रिया साहब, बहुत-बहुत शुक्रिया—आपको नहीं मालूम साहब मुझे कितनी ख़ुशी हुई ये सब जानकर। मैं तो समझ रहा था कि बरखास्त कर दिया जाऊँगा।'

'लेकिन तुमने ऐसा क्यों सोचा ?'

'मैं समझा मिस मालती ने मेरी शिकायत की होगी—आप जानते हैं साहब, मैंने उनको ज़मीन पर गिरा दिया था—एक ही तरीक़ा था उनको क्रेन की ज़द से बचाने का।'

'मैं जानता हूँ, जानता हूँ। तुमने जो कुछ किया अच्छा किया। मैंने मालती से कह दिया है जब कभी वह डौक्स में घूमना चाहे वह तुमको गाइड की हैसियत से ले जाये, कहो क्या खयाल है ?'

'नहीं साहब—ये कैसे हो सकता है ?' गड़बड़ाकर उसने कहा, 'ये तो बड़ी ख़ुशी की बात है साहब—मेरा मतलब है मेरे लिए बड़ी इज़्ज़त

की बात है।'

और फिर वह नमस्कार करते हुए बाहर चला गया।

बाबू भाई ने जाते हुए गोपाल को कुछ इस तरह से देखा जैसे उसने कामयाबी से एक जंगली जानवर को अपने बस में कर लिया हो। अपना सोने का सिग्रेट-केस उठाया। एक सिग्रेट जलाया और बड़े इतमिनान से अपने मुँह से धुएँ का एक बादल छोड़ा।

3

चोर सिपाही

डौक पर अनाज की बोरियाँ जहाज़ से उतारी जा रही थीं। मज़दूर पहले तो अनाज की बोरियों को एक गोदाम के पास लाकर रखते थे फिर उनकी गिनती होकर उनको रजिस्टर में चढ़ाया जाता था, फिर वे बोरियाँ ट्रकों में भरी जा रही थीं।

ये काम रात को हो रहा था लेकिन वहाँ पर रात का अँधेरा नहीं, दिन की रोशनी हो रही थी क्योंकि बड़े-बड़े बिजली के लैम्प जल रहे थे।

ये सब काम रंजीत की निगरानी में हो रहा था। गोपाल ट्रक के ऊपर खड़ा-खड़ा बोरियाँ गिन रहा था। रंजीत ने गोपाल से कहा, 'ज़रा होशियार रहना। किसी ने बोरी में चाकू मारकर कई किलो अनाज दोपहर को चुरा लिया है।'

'फ़िक्र मत करो', गोपाल ने जवाब दिया, 'मैं चोरों पर कड़ी नज़र रखूँगा। सेठ साहब ने मुझे स्पेशल बोनस देने का वायदा किया है।'

दो मज़दूरों ने अनाज के एक बोरे पर क्रास (×) का निशान देखा और एक-दूसरे की तरफ़ आँख मारी।

ट्रक के ऊपर बोरियों को रखते हुए मज़दूरों ने रंजीत से कहा, 'होशियार रहना, इस बोरी को सबसे ऊपर रखो।'

'क्यों ?' गोपाल ने पूछा, 'क्या इस बोरी में सोने के दाने भरे हैं ?'

'ज़्यादा सवाल मत करो', रंजीत ने ज़रा कुछ सख़्त होकर कहा, 'बस इतना याद रखो ये सेठ साहब का हुक्म है। अगर तुम्हें डबल पगार लेनी है तो अपना मुँह बन्द ही रखो।'

गोपाल ने ज़्यादा सवाल-जवाब करना उचित न समझा।

अनाज से भरे हुए ट्रक डौक के गेट से गुज़र रहे थे।

अब वे ट्रक सड़क पर दौड़ रहे थे।

एक ट्रक के ऊपर गोपाल बैठा था। उसके हाथ में मछली पकड़ने का एक काँटा और डोर थी।

उसके आगे वाले ट्रक के ऊपर बैठा हुआ एक मज़दूर ज़ोर से बोला, 'अरे गोपाल, क्या तुम मछली पकड़ने जा रहे हो?'

'हाँ मेरे दोस्त!—एक बहुत बड़ी मछली।'

ट्रक चले जा रहे थे।

चलते ट्रक के ऊपर बैठे गोपाल ने महसूस किया कि ट्रक के पीछे कोई भाग रहा है।

एक मछली पकड़ने वाले की तरह गोपाल ने अपनी डोर फेंकी।

डोर में लगा हुक गिरा और इन्दू की साड़ी से उलझकर रह गया जो हमेशा की तरह चलते ट्रकों में लदी अनाज की बोरियों में चाकू से सुराख करके अनाज चुराती थी।

गोपाल ने डोर को खींचा—हुक फँस चुका था।

'अब मैंने चोर पकड़ लिया है', उसने अपने-आप से कहा और ज़ोर से खींचा।

इन्दू ने महसूस किया उसकी साड़ी कंधे से फ़िसलती जा रही है। जब उसने अपनी साड़ी के पल्लू में फँसे हुए हुक और उसमें लगी डोर को देखा तो वह समझ गयी कि आज वह पकड़ी गयी।

लेकिन साड़ी पुरानी और फटी हुई थी।

जब गोपाल ने डोर को सख़्ती से खींचा तो साड़ी फट गयी और इन्दू आज़ाद हो गयी।

वह भागने लगी।

गोपाल ने ट्रक रुकवाया, ऊपर से नीचे कूदा।

इन्दू गहरी परछाइयों की तरफ़ भागी—अब वह इतनी दूर तक भाग चुकी थी कि एक परछाईं बन गयी थी।

गोपाल उस परछाईं के पीछे भाग रहा था।

64350

आखिरकार गोपाल ने उसको पकड़ लिया—इन्दू के आगे गोदाम की दीवार थी। भागने का कोई रास्ता नहीं था।

गली में लैम्प-पोस्ट की रोशनी में उसने 'चोर' को देखा—ये एक लड़की थी—गन्दी, ग़रीब लेकिन ख़ूबसूरत।

'कौन हो तुम ?' गोपाल ने चिल्लाकर पूछा।

'मैं इन्दू हूँ साहब', उसने डरते-डरते बड़े भोले अन्दाज़ में जवाब दिया, 'मैं दोबारा ऐसा नहीं करूँगी।'

'लेकिन इस दोपहर को भी तूने अनाज चुराया था—बोल चुराया था कि नहीं ?'

'हाँ साहब, चुराया···लेकिन···'

'लेकिन क्या ?'

'मेरे बाप ने सब-कुछ ले लिया और उसे बेच दिया दारू ख़रीदने के लिए।'

'अच्छा तो इसलिए दोबारा चुराना चाहती हो।'

'हाँ साहब···बात यह है, कल रक्षाबन्धन है। मुझे राखी ख़रीदनी है अपने भाई को बाँधने के लिए···और पेड़े भी तो लेने हैं।'

'छोकरी बुरी नहीं', उसकी तरफ़ आगे बढ़ते हुए उसने सोचा।

जैसे ही वह आगे बढ़ा, अपनी कल्पना में क्या देखता है कि इन्दू के चीथड़ों में लिपटी मालती उसके सामने खड़ी है।

गोपाल कह रहा था, 'जानती हो अगर हम फ़िल्म में होते और ऐसी काली रात में विलन तुम्हें ऐसी वीरान जगह देख लेता···।'

'लेकिन साहब', इन्दू ने दीवार की तरफ़ सरकते हुए जवाब दिया, 'मैं जानती हूँ आप विलन नहीं हैं—आप हीरो हैं—असली हीरो—'

'असली हीरो···मैं···मैं···' गोपाल ने हँसना शुरू किया। उसने इन्दू (जो उस वक़्त उसे मालती नज़र आ रही थी) को पकड़ लिया।

उसी वक़्त पुलिस की सीटी सुनायी दी। वह झट से अपनी कल्पना से लौटा तो महसूस किया वह मालती नहीं इन्दू थी—और अब तेज़-तेज़ क़दमों की चाप सुनायी दे रही थी।

पुलिस !

दोनों चौंक उठे।

गोपाल ने इन्दू को परछाइयों में ढकेल दिया—अब वह नजर नहीं आ सकेगी।

वह पीछे पलटा और एक शराबी का रूप धार लिया। कुछ गुनगुनाते हुए आगे की तरफ़ लड़खड़ाने लगा। सीधा जाकर लैम्प-पोस्ट से भिड़ गया। उस पर अपना सर मारा।

सामने से एक हवलदार आया। उसे ग़ौर से देखा। फिर इतमिनान का साँस लिया कि कोई चोर, डाकू या स्मगलर नहीं बल्कि एक शराबी है जो लैम्प-पोस्ट को अपने सामने से हट जाने को कह रहा है।

'हवलदार साहब', गोपाल ने मराठी में कहा, 'इस आदमी से कहो कि मेरे सामने से हट जाये।'

हवलदार मुस्कराया और गोपाल को कन्धे से पकड़कर लैम्प-पोस्ट के सामने से हटा दिया।

'ले हटा दिया, अब ठीक है ना ?' हवलदार ने पूछा।

'हाँ', अब गोपाल गुजराती बोलने लगा, 'वधू सारू छे।'

वह आगे की तरफ़ लड़खड़ाया—एक पंजाबी गाना गुनगुनाने लगा।

हवलदार ख़ुश भी हुआ और ताज्जुब भी करने लगा—पहले मराठी—फिर गुजराती और अब पंजाबी—क्या ये पिये हुए है या मैं पिये हुए हूँ ?

गोपाल रास्ते की परछाइयों में से ग़ायब हो गया था।

हवलदार गश्त करने दूसरी तरफ़ चला गया।

इन्दू ने, जो परछाइयों के पीछे सिकुड़ी खड़ी थी, इतमिनान का साँस लिया और गोपाल की तरफ़ देखकर मुस्कराने लगी।

४

हैलो, मिस मालती !

गोपाल साफ़-सुथरी जैकिट और स्लैक्स पहने और टोपी को बड़े अलबेले तरीक़े से लगाये हुए स्वागत कर रहा था।

'हैलो, मिस मालती !' वह टोपी उतारकर कहता है।

'अंग्रेज़ी नहीं बोलतीं ?' जवाब न पाकर पूछता है, 'पार्ली वॉयस फ्रांसाइज़ ?'

'आप हिन्दी तो बोलती होंगी ?'

वह इस प्रश्न को पंजाबी, मराठी, गुजराती, तमिल, कन्नड़ भाषाओं में दोहराता है।

अब हम गोपाल को उसके ख़ाली कमरे में उसकी कल्पना की मालती से बात करते हुए देखते हैं।

लेकिन वहाँ उसकी पुरानी महबूबाएँ मौजूद हैं। फ़िल्म स्टारों की तस्वीरें और अश्लील मॉडल्स की तस्वीरें दीवारों पर लगी हुई हैं।

'तुम सब जलती हो', गोपाल उन तस्वीरों से कहता है।—फिर टोपी पहनकर कहने लगता है, 'हम मिस मालती को डौक्स की सैर कराने जाता है—समझीं ? जलने वाले जला करें।'

और आँख मारकर 'बाय-बाय डार्लिंग' कहता हुआ तेज़ी से कमरे से निकल जाता है और ज़ोर से कमरे का दरवाज़ा बन्द कर देता है।

'शिपयार्ड' का क्लर्क अमर अपनी मेज़ पर बैठा हुआ मज़दूरों की

हाज़री ले रहा था और उनको उनकी पगार दे रहा था। कुछ मज़दूर काम न मिलने की शिकायत कर रहे थे कि वे बेरोज़गार हैं। अमर उन्हें तसल्ली दे रहा था, उनकी हिम्मत बढ़ा रहा था कि उन्हें अपनी कोशिश जारी रखनी चाहिए। उन्हें समझाते हुए वह अपनी जेब से थोड़े पैसे निकालकर भी उनको दे रहा था।

'भई काम तो नहीं दे सकता। इस वक़्त ये ले जाओ। जब काम मिले वापस कर देना।'

गोपाल कोने में बैठा बीड़ी पीते हुए ये सब देख रहा था लेकिन उसको जल्दी नहीं थी। जब आख़िरी मज़दूर चला गया और अमर और वह अकेले रह गये तो वह उठकर अमर के पास आकर बोला, 'तुम साले क्या हातिमताई के बाप हो?'

'क्यों गोपाल? क्या हुआ?'

'चार सौ रुपल्ली तो तुम्हें पगार मिलती है—और उसमें से भी रोज दो-चार रुपये इन मुफ़्तखोरों को देते रहते हो?'

'भई कभी मैं भी इनकी तरह ही बेकार और मुफ़्तखोरा था। अब दो-चार किताबें पढ़कर क्लर्क हो गया हूँ—मगर हूँ तो मैं मज़दूर ही। क्यों, तुम्हें इन लोगों से हमदर्दी नहीं?'

'है भी—और नहीं भी—अमर भाई, अपन ने तो दुनिया में एक ही सबक सीखा है—हर एक को अपनी फ़िक्र करनी चाहिए—दूसरे की चिन्ता की और मारे गये।'

'हाँ भाई, तुम कह सकते हो—सेठ ने तुम्हें सुपरवाइज़र बना दिया है ना! पगार भी डबल कर दी है। लो लगाओ अँगूठा और लो अपनी पगार।'

उसने रजिस्टर अपने सामने रखा, फिर स्याही लगा स्टांप-पैड खोला—गोपाल ने अपना अँगूठा पैड पर रखा।

अमर बोला, 'गोपाल, कितनी बार कहा इतनी भाषाओं में गिटपिट करता है, दो-चार शब्द लिखना भी सीख ले। मगर तू मानता ही नहीं।'

स्टांप-पैड पर अँगूठा दबाते हुए गोपाल ने जवाब दिया, 'छोड़ो भी अमर भैया। बुड्ढे तोतों ने भी कभी पढ़ना-लिखना सीखा है। वे तो बोल

ही सकते हैं।'

ये बात मालती और रंजीत ने सुन ली जो अभी दरवाज़े से अन्दर आये थे और जिनको गोपाल और अमर देख नहीं पाये थे।

अपने अँगूठे का निशान रजिस्टर पर लगाकर (मालती उसको अँगूठा लगाते देख रही थी) गोपाल मालती की तरफ़ पलटा जो अब उसके सामने ऐसे खड़ी थी जैसे कोई लपकता हुआ शोला हो—वह खुश थी। भड़कीले लिबास में वह बहुत सुन्दर लग रही थी।

उसने मालती की तरफ़ देखा और फिर अपने अँगूठे की तरफ़, जिस पर स्याही लगी हुई थी।

वह अपनी हँसी रोक नहीं सकी। उसने गोपाल को नहीं पहचाना था।

वह भी हँसा।

वह भी हँसी।

वह फिर हँसा।

रंजीत को उन दोनों का हँसना अच्छा नहीं लगा। वह जलकर बोला, 'ए···!'

'जी रंजीत साहब!'

'सेठ साहब का हुक्म है कि तुम मिस मालती को सारा डौक्स एरिया घुमाओगे।'

'मगर रंजीतजी', मालती बीच में बोली, 'काकाजी ने तो कहा था गोपाल तुम्हारे साथ जायेगा!'

'गोपाल ही तो है यह!' रंजीत बोला, 'वैसे आपको इस बेवक़ूफ़ के साथ जाना पसन्द न हो तो सेवक हाज़िर है।' उसने बड़े अन्दाज़ से झुककर कहा।

'तो गोपाल ये है?—मैं तो समझी थी गोपाल तो काला-कलूटा होगा!'

आखिरकार गोपाल बोल उठा—

'मेरी सूरत पर मत जाइये मिस साहब—मेरे करतूत सब काले हैं!'

मालती अपनी हँसी रोक न सकी।

अब गोपाल मालती को डौक्स पर घुमा रहा था—पहले पैदल फिर जीप में।

'गोपाल, तुम जीप चला सकते हो—मगर अपने दस्तखत नहीं कर सकते ?'

'मिस साहब, डौक्स में काम करने से पहले मैं एक मकैनिक का असिस्टेन्ट हुआ करता था—मोटर चलाना सीख गया—अगर किसी मास्टर या मास्टरनी का असिस्टेन्ट होता तो कलम चलाना भी सीख जाता…।'

'मगर ज़बान चलाना तो खूब जानते हो…।'

'ज़बान चलाना—बातें बनाना। ये काम मैं हर ज़बान में कर सकता हूँ—आप बहुत अच्छी हैं…छोकरी बद्दू सारू छे…ही मुलगी फार सुन्दर आहे…।'

'अरे वाह—तुम तो चलता-फिरता अखिल भारतीय भाषा सम्मेलन हो!'

'मिस साहब, डौक्स पर हर जगह के लोग काम करते हैं। सबकी बोली के दो-दो चार-चार शब्द सीख लिए।'

'कोई विदेशी भाषा भी आती है ?'

'यस यस…नो…नो…हैलो सर…वाट यू वांट ? वाट ब्लॅडी कन्ट्री यू कम फ्राम ! आई स्पीक गुड गुड इंगलिश, नो थैंक्यू सर…मरसी मैडम…विले पार्ली फ्रांसाइज़…'

मालती एकदम हँस पड़ी।

'बेवक़ूफ़…विले पार्ली फ्रांसाइज़ नहीं पार्ली वॉयस फ्रांसाइज़।'

'मैं भी तो अनाड़ी हूँ मिस साहब…' वह बोला।

फिर दोनों ही हँस पड़े।

अब वे डौक्स के किनारे पर खड़े थे।

उनके आगे बन्दरगाह थी—और फिर नीला समन्दर।

दूरदराज के बड़े-बड़े जहाज़ डौक्स में खड़े थे।

'मुझे नहीं मालूम था कि डौक्स का इलाक़ा इतना बड़ा है। मैं तो बचपन से काकाजी से कहती थी, मुझे डौक्स देखने का बहुत शौक़ है, मगर उनको कभी फ़ुरसत ही नहीं मिलती—सुना है बचपन में मेरे पिताजी मुझे

ही सकते हैं।'

ये बात मालती और रंजीत ने सुन ली जो अभी दरवाज़े से अन्दर आये थे और जिनको गोपाल और अमर देख नहीं पाये थे।

अपने अँगूठे का निशान रजिस्टर पर लगाकर (मालती उसको अँगूठा लगाते देख रही थी) गोपाल मालती की तरफ़ पलटा जो अब उसके सामने ऐसे खड़ी थी जैसे कोई लपकता हुआ शोला हो—वह खुश थी। भड़कीले लिबास में वह बहुत सुन्दर लग रही थी।

उसने मालती की तरफ़ देखा और फिर अपने अँगूठे की तरफ़, जिस पर स्याही लगी हुई थी।

वह अपनी हँसी रोक नहीं सकी। उसने गोपाल को नहीं पहचाना था।

वह भी हँसा।

वह भी हँसी।

वह फिर हँसा।

रंजीत को उन दोनों का हँसना अच्छा नहीं लगा। वह जलकर बोला, 'ए...!'

'जी रंजीत साहब !'

'सेठ साहब का हुक्म है कि तुम मिस मालती को सारा डौक्स एरिया घुमाओगे।'

'मगर रंजीतजी', मालती बीच में बोली, 'काकाजी ने तो कहा था गोपाल तुम्हारे साथ जायेगा !'

'गोपाल ही तो है यह !' रंजीत बोला, 'वैसे आपको इस बेवक़ूफ़ के साथ जाना पसन्द न हो तो सेवक हाज़िर है।' उसने बड़े अन्दाज़ से झुककर कहा।

'तो गोपाल ये है ?—मैं तो समझी थी गोपाल तो काला-कलूटा होगा !'

आख़िरकार गोपाल बोल उठा—

'मेरी सूरत पर मत जाइये मिस साहब—मेरे करतूत सब काले हैं।'

मालती अपनी हँसी रोक न सकी।

अब गोपाल मालती को डौक्स पर घुमा रहा था—पहले पैदल फिर जीप में।

'गोपाल, तुम जीप चला सकते हो—मगर अपने दस्तखत नहीं कर सकते ?'

'मिस साहब, डौक्स में काम करने से पहले मैं एक मकैनिक का असिस्टेन्ट हुआ करता था—मोटर चलाना सीख गया—अगर किसी मास्टर या मास्टरनी का असिस्टेन्ट होता तो कलम चलाना भी सीख जाता···।'

'मगर ज़बान चलाना तो खूब जानते हो···।'

'ज़बान चलाना—बातें बनाना। ये काम मैं हर ज़बान में कर सकता हूँ—आप बहुत अच्छी हैं···छोकरी बद्दू सारू छे···ही मुलगी फार सुन्दर आहे···।'

'अरे वाह—तुम तो चलता-फिरता अखिल भारतीय भाषा सम्मेलन हो !'

'मिस साहब, डौक्स पर हर जगह के लोग काम करते हैं। सबकी बोली के दो-दो चार-चार शब्द सीख लिए।'

'कोई विदेशी भाषा भी आती है ?'

'यस यस···नो···नो···हैलो सर···वाट यू वांट ? वाट ब्लॅडी कन्ट्री यू कम फ्राम ! आई स्पीक गुड गुड इंगलिश, नो थैंक्यू सर···मरसी मैडम···विले पार्ली फ्रांसाइज़···'

मालती एकदम हँस पड़ी।

'बेवक़ूफ़···विले पार्ली फ्रांसाइज़ नहीं पार्ली वॉयस फ्रांसाइज़।'

'मैं भी तो अनाड़ी हूँ मिस साहब···' वह बोला।

फिर दोनों ही हँस पड़े।

अब वे डौक्स के किनारे पर खड़े थे।

उनके आगे बन्दरगाह थी—और फिर नीला समन्दर।

दूरदराज के बड़े-बड़े जहाज़ डौक्स में खड़े थे।

'मुझे नहीं मालूम था कि डौक्स का इलाक़ा इतना बड़ा है। मैं तो बचपन से काकाजी से कहती थी, मुझे डौक्स देखने का बहुत शौक़ है, मगर उनको कभी फ़ुरसत ही नहीं मिलती—सुना है बचपन में मेरे पिताजी मुझे

कन्धे पर बैठाकर यहाँ लाया करते थे···चार-पाँच बरस की थी तो पिताजी-माताजी दोनों छोड़कर चले गये···।'

गोपाल ने आश्चर्य से पूछा, 'तुम्हारे पिता कन्धे पर बैठाकर लाते थे···इतने बड़े सेठ होकर ?'

'मैं तो छोटी थी···मगर सुना है वह इतने बड़े सेठ नहीं थे। डौक्स में काम करते-करते अपनी कम्पनी बना ली थी···आज मुझे यहाँ आकर ऐसा लगा जैसे वो ही मुझे यहाँ लेकर आये हैं।'

वह अपने पिता की यादों में खो गयी कि अचानक मोटर के तेज़ हॉर्न ने उसके ख़यालों में खलल डाल दिया।

मालती और गोपाल ने पीछे पलटकर देखा।

वह रंजीत था जिसने अभी-अभी गाड़ी में ब्रेक लगाये थे। गाड़ी रुकने पर वह नीचे उतरा।

'मिस मालती, शुक्र है आप मिल गयीं—सेठ साहब आपकी बड़ी चिन्ता कर रहे हैं। हम लोगों ने हर तरफ़, हर जगह देखा। गोपाल, तुम यहीं ठहरो।'

मालती समझाने लगी, 'इसमें गोपाल का कोई क़सूर नहीं है। मैं ख़ुद सारा डौक्स एरिया देखना चाहती थी···आओ चलें।'

वह जीप में सामने वाली सीट पर जाकर बैठ गयी।

'तुम क्या सोच रहे हो गोपाल ?' वह पूछने लगी, 'क्या तुम नहीं आ रहे हो ?'

'उसके लिए कोई जगह नहीं है—वह पैदल वापस जा सकता है।'

और रंजीत ने जीप को एकदम तेज़ कर दिया।

गोपाल वहाँ अकेला छोड़ दिया गया। वह आप-ही-आप मुस्कराया। उसके होठों से 'विले पार्ली फ्रांसाइज़' शब्द फड़फड़ाने लगे। फिर उसने एक पत्थर उठाया और दूर पानी में फेंका—पत्थर डूब गया और अपने पीछे कई बुलबुले छोड़ गया।

५

गुरुमन्त्र

बाबू भाई और मालती डाइनिंग टेबिल पर बैठे थे और चाँदी की थालियों में शाम का खाना खा रहे थे।

बाबू भाई मालती से डौक्स पर घूमने के बारे में सवाल कर रहे थे।

'अच्छा तो मालती डौक्स पर जाने की तुम्हारी इच्छा तो पूरी हो गयी ?'

'हाँ काकाजी—मैं वह जगह देखना चाहती थी जहाँ कभी मेरे पिताजी काम करते थे।'

'बहुत पुरानी बात है और अब तो सब लोग तुम्हारे पिताजी को एक कांट्रेक्टर की हैसियत से याद करते हैं—कम्पनी के मालिक जिन्होंने अपनी कम्पनी की बुनियाद रखी थी।'

'लेकिन मैं जानती हूँ कभी इन्हीं डौक्स में पिताजी एक मज़दूर की हैसियत से काम करते थे—गोपाल की तरह।'

'अरे वो गोपाल ? वो बड़ा होशियार नौजवान है—बड़ी बात ये है कि ट्रेड यूनियन-वूनियन के चक्कर में नहीं पड़ता—वह उनका वफ़ादार है जो उसको रुपया देते हैं। मैंने उसको सुपरवाइज़र बना दिया है—और भी ऊपर जा सकता है। तुमने उसके बारे में क्या राय क़ायम की ?'

'मुझे बड़ा अचम्भा हुआ कि वो इतना होशियार है, इतनी भाषाओं में बात कर सकता है लेकिन अपने नाम के दस्तख़त नहीं कर सकता !'

'हाँ, ये लोग ऐसे ही होते हैं। तकड़े लेकिन दिमाग़ नहीं।'

'उनको अक़्ल कैसे आ सकती है जब उनको शिक्षा ही न दी गयी हो ?'

और फिर बोली, 'काकाजी, अब मैंने तो अपनी शिक्षा पूरी कर ली है। बेकार बैठने से क्या फ़ायदा। अगर मैं डौक्स के मज़दूरों की बस्ती में कोई स्कूल खोल लूँ तो आपको कोई एतराज़ तो न होगा ?'

'हूँ' बाबू भाई ने एक क्षण के लिए सोचा और फिर बोले, 'क्यों नहीं ? हमको मज़दूरों को ख़ुश रखने की ज़रूरत है ताकि उनको महसूस हो कि हम उनकी देखभाल कर रहे हैं। जब उनको मालूम होगा कि उनके मालिक की भतीजी ख़ुद उनके लिए स्कूल चला रही है तो हमारे बारे में अच्छा ही सोचेंगे···थैंक्यू माई डीयर ! तुम्हारा ख़याल बहुत अच्छा है !'

सेलर ब्वाय बार—

गोपाल एक कोने में टेबिल पर बैठा पी रहा था। अब तक कई बार पी चुका था।

रोज़ी नाच रही थी।

लेकिन गोपाल की पी हुई आँखों से लगता था ये मालती है जो नाच रही है और उसको प्यार से इशारे कर रही है।

एक विदेशी सेलर आया और गर्मजोशी से उसको पीछे एक धप लगा गया। अचानक धक्का लगने से मालती की कल्पना ग़ायब हो गयी और गोपाल को अपने सामने रोज़ी नाचती हुई नज़र आयी।

गोपाल मुँह बनाकर बड़बड़ाया, 'धत् तेरी की ! सारा मज़ा किरकिरा कर दिया—अब मुझे और पीनी पड़ेगी।'

'तुमने क्या कहा !' विदेशी सेलर ने पूछा और फिर ख़ुद ही कहा, 'कोई बात नहीं, मेरी तरफ़ से पियो—चलो।' उसने गोपाल के सामने एक गिलास रखा और गोपाल ने उसे हलक से नीचे उतार लिया।

मज़दूरों की बस्ती—

शराब में धुत गोपाल लड़खड़ाता हुआ अपने घर की तरफ़ जा रहा था। उसके होंठ कुछ कह रहे थे या गुनगुना रहे थे जिससे ज़ाहिर होता था

कि वह ज़रूर किसी की मुहब्बत में गिरफ़्तार हो गया है।

अपने कमरे में दाख़िल होकर उसने लाइट जलायी।

नशे की हालत में दीवार पर लगी फ़िल्म स्टारों की तस्वीरों की तरफ़ देखा और आप-ही-आप बोला, 'तुम चली गयीं मिस साहब, और मुझे समन्दर के किनारे खड़ा छोड़ गयीं ? इसलिए कि मैं दस्तख़त नहीं कर सकता ?'

फिर उसने ख़ुद को बिस्तर पर गिरा दिया और गहरी नींद सो गया।

स्कूल का घण्टा बज रहा था।

बच्चे मज़दूरों की बस्ती से भाग रहे थे।

इनमें फ़ज़लू चाचा के ग्यारह बच्चे भी शामिल थे।

बच्चे स्कूल आते हैं। स्कूल बाँस की चटाइयों का बना हुआ है।

मालती टीचर की हैसियत से खड़ी हुई थी।

बच्चे उसको घेरे हुए थे।

मालती ने बच्चों को बैठने के लिए कहा।

'बच्चो, पहले हम सब मिलकर गायेंगे—फिर पढ़ेंगे-लिखेंगे।'

सब बच्चे ज़ोर-ज़ोर से ताली बजाते हैं।

मालती 'ईचक दाना, पीचक दाना' टाइप का गाना शुरू कर देती है, जो गाना भी है और पहेलियों का एक सिलसिला भी।

'ये ग़ौर महदूद है।'

'तुम उसका किनारा नहीं देख सकते।'

'ये सारी दुनिया के चारों तरफ़ फैला हुआ है।'

'लेकिन तुम उसे पानी के एक प्याले में भी रख सकते हो।'

'समन्दर! समन्दर!!' सब बच्चों ने एक साथ मिलकर जवाब दिया।

× × ×

'ये यहाँ से आते हैं।'

'ये वहाँ से आते हैं।'

'ये भारी से भारी वज़न ले जाते हैं।'

'लेकिन ये पानी से हल्के होते हैं।'

बच्चे चिल्ला पड़े, 'जहाज़! जहाज़!!'

× × ×

'सारी दुनिया यहाँ है।'

'इंग्लैंड, अमरीका, फ्रांस।'

'रूस, चीन, जापान।'

'लेकिन वो हिन्दुस्तान में है।'

बच्चों ने मिलकर कहा, 'डौक्स! डौक्स!!'

× × ×

'वो दिन को काम करता है।'

'वो रात को काम करता है।'

'वो कभी आराम नहीं करता।'

'वो पहाड़ों को हटा सकता है लेकिन अपनी ताक़त को नहीं पहचान सकता।'

बच्चे इसे आसानी से नहीं बता सके। एक-दूसरे का मुँह देखने लगे।

एक आवाज़ आयी, 'मज़दूर।'

सारे बच्चों ने, और उनकी टीचर ने पलटकर देखा।

गोपाल दरवाज़े में कुछ किताबें और स्लेट लिए खड़ा था।

बच्चे इतने बड़े विद्यार्थी को देखकर हँसने लगे और गोपाल झेंपकर वापस जाने लगा लेकिन मालती की आवाज़ ने उसे रोक लिया।

'बैठो गोपाल!'

गोपाल क्लास के पीछे जाकर बैठ गया हालाँकि छोटे-छोटे बच्चों में बैठना उसे बड़ा अजीब-सा लग रहा था।

मालती ब्लैकबोर्ड पर 'अ' अक्षर लिखती है और बच्चों से कहती है कि वे अपनी स्लेट पर लिखें।

मालती ने एक बच्चे का हाथ पकड़कर उससे 'अ' लिखवाया।

अब मालती एक जवान हाथ को पकड़कर···गोपाल के हाथ को, 'ग' लिखवा रही थी।

अब क्लास ख़त्म हो गयी। आख़िर में मालती गोपाल की मदद कर

रही थी कि वह अपना नाम लिखना सीख ले।

गोपाल को मालती की उँगलियाँ विजली की तरह छू गयीं।

'देखिये आप मुझे हाथ न लगाइये।' गोपाल ने उससे प्रार्थना की।

'क्यों ? क्या तुम अछूत हो ?'

'क्या मालूम ? शायद अछूत ही हूँ। अपना वक़्त वेकार न कीजिये मिस मालती—मुझे लिखना नहीं आयेगा।'

'कैसे नहीं आयेगा ?' दोबारा उसने गोपाल का हाथ पकड़ लिया और उसकी उँगलियों को 'गोपाल' लिखना सिखाने लगी, 'सबसे पहले अपना नाम लिखना सीखो—यही सबसे वड़ा गुरुमन्त्र है।'

गोपाल ने उसकी तरफ़ सवालिया अन्दाज़ से देखा।

वह सर को झुकाकर उसकी तरफ़ देखती रह गयी।

'बच्चों के हँसने की परवाह न करो—तुम हमारे घर आ जाया करो, जब भी तुम्हें फ़ुरसत मिले। मैं वहाँ तुम्हें पढ़ाया करूँगी।'

'सच, मिस मालती !'

'हाँ।'

'मैं पूछ सकता हूँ, क्यों ?'

'क्योंकि—क्योंकि तुमने मेरी जान वचायी है। क्या यह एक वजह काफ़ी नहीं है ?'

उसने सर हिलाया, 'हाँ।'

गोपाल अपने कमरे में लिखने की प्रैक्टिस कर रहा है।

स्लेट पर वह 'गोपाल' लिख रहा था—गोपाल—गोपाल—गोपाल।

उसके बूढ़े पड़ोसी (फ़ज़लू चाचा) ने गोपाल को काम करते देखा, तो पुकारा, 'अरे ओ गोपाल, अब सो जा थोड़ी देर, रात पाली करनी है क्या ?'

'अभी सो जाऊँगा चाचा।' गोपाल ने उसको यक़ीन दिलाया लेकिन स्लेट पर लिखना जारी रखा—गोपाल ! गोपाल !! गोपाल !!!

और फिर उसके कान में मालती की आवाज़ सुनायी दी, 'सबसे पहले अपना नाम लिखना सीख लो—यही सबसे बड़ा गुरुमन्त्र है।'

६

दूर और पास

रात को—

अनाज से भरे हुए ट्रक ऑफ़िस के पास आकर रुके।

एक बोरी में सुराख़ है और उसमें से अनाज गिर रहा है।

रंजीत ट्रकों का मायना कर रहा था। उसको फटी हुई बोरी का पता चला तो वो ज़ोर से चिल्लाया, 'गोपाल, अरे ओ गोपाल! सो रहा है हरामज़ादे!'

रंजीत की आवाज़ों को सुनकर गोपाल ट्रक के ऊपर से कूद पड़ा और रंजीत के सामने आया।

'क्या कहा रंजीत बाबू?' उसने आस्तीन चढ़ाते हुए पूछा, 'एक बार फिर कहो।'

'एक तो ड्यूटी पे सोता है, ऊपर से घूरता है। मैं क्या डरता हूँ तुझसे? हरामज़ादा···हराम···'

वह दूसरा हरामज़ादा ख़त्म न कर सका क्योंकि गोपाल का एक ताक़तवर घूँसा उसके चेहरे पर पड़ा।

लेकिन रंजीत ख़ुद भी तकड़ा था—दोनों में गुत्थमगुत्था लड़ाई हुई।

अमर ने लड़ाई को रोकने की कोशिश की और चिल्लाया, 'गोपाल! गोपाल!—रंजीत बाबू! रंजीत बाबू!'

लेकिन एक तेज़ आवाज़ ने लड़ाई को रोक दिया।

'रंजीत!'

'गोपाल!'

ये सेठ बाबू भाई की आवाज़ थी और इसमें बिजली का-सा असर था। दोनों ने लड़ाई रोक दी।

'अब हाथ मिलाओ तुम दोनों।'

गोपाल और रंजीत ने झेंपकर हाथ मिलाये।

'रंजीत ! खबरदार जो कभी गोपाल को हाथ लगाया···और गोपाल, देखो आइन्दा ड्यूटी पर न सोना। याद रखो ये अनाज हमारी भूखी जनता का पेट भरने को आता है। अगर इसको लोगों तक पहुँचने से पहले ही अनाज चोरों ने हड़प कर लिया तो हमारी जनता भूखी रह जायेगी—अब तुम जाओ और सो जाओ।'

जब गोपाल कुछ हिचकिचाया तो बाबू भाई ने बड़ी नम्रता से कहा, 'जाओ, जाओ—और अमर तुम भी अब घर जाओ—आज हम खुद तुम्हारी जगह काम देखेंगे।'

जब वे जाने लगते हैं तो गोपाल ने अहसानमन्द निगाहों से सेठ को देखा लेकिन अमर की निगाहों में शक और शुबः भरा हुआ था।

डौक्स के अहाते से गुजरते हुए गोपाल ने कहा, 'ये सेठ तो कमाल का आदमी है ! कौन अपने काम करने वालों का इतना खयाल रखता है ?'

'लेकिन', अमर ने कहा, 'मुझे तो कुछ दाल में काला मालूम होता है।'

'अमर भैया', गोपाल ने जवाब दिया, 'तुम तो बड़े ही शक्की मिज़ाज हो।'

फिर डौक्स के ऑफ़िस में—उसी रात को—

अनाज की एक बोरी को ज़मीन पर उतारा गया।

सेठ बाबू भाई ने रंजीत से कहा, 'बेवक़ूफ़ कहीं का—तुम्हें भी गोपाल से आज के दिन ही झगड़ा मोल लेना था !'

जैसे ही बाबू भाई और रंजीत वहाँ से गये इन्दू दबे पाँव उस बोरी

के पास आयी। उसमें ज़ोर से एक चाकू मारा। अनाज नीचे गिरने लगा तो इन्दू ने अपनी साड़ी के पल्लू में अनाज भर लिया।

इन्दू का घर—

इन्दू के फटे हुए पल्लू में तीन-चार किलो गेहूँ बँधा था। उसका शराबी बाप उसका मायना कर रहा था।

'अच्छा तो आख़िर तुझे आज कुछ मिल ही गया।'

'हाँ बाबा! एक हफ़्ते के लिए काफ़ी होगा।'

'नहीं सिर्फ़ साढ़े तीन दिन—इसका आधा तुम घर के लिए रख लो और आधा मैं बेच दूँगा···'

'और दारू ख़रीदोगे?'

'मुझ जैसे बूढ़े और बीमार आदमी को दारू तो चाहिए ही।' उसने कहा और इन्दू से अनाज छीनकर आधा अनाज अपनी कमीज़ में भरकर दारू की दुकान की तरफ़ भाग गया।

इन्दू अपने बूढ़े बाप पर बड़बड़ाती रह गयी।

अगले दिन—

झोंपड़पट्टी की एक छोटी-सी दुकान में दिन की रोशनी में रंग-बिरंगी राखियाँ झिलमिला रही थीं।

इन्दू राखी ख़रीदने के लिए आयी। आज वह पहले से ज़्यादा साफ़-सुथरी नज़र आ रही थी। उसने अपने बालों को कंघी करके जमाया हुआ था। एक गुलाब का फूल भी उसके बालों में लगा हुआ था। जितनी साड़ियाँ उसके पास थीं, उन सबमें अच्छी साड़ी उसने पहनी जो कम मैली और कम फटी हुई थी।

राखी ख़रीदकर वह झोंपड़पट्टी की गली से गुज़र रही थी और अमर के झोंपड़े के पास आयी।

'अमर भैया, भैया!' उसने पुकारा, 'जानते हो आज कौन-सा दिन

है ?'

'मेरी छोटी वहन आयी है तो···' अमर ने जवाब दिया, 'रक्षावन्धन का दिन होना चाहिए।'

वह अमर की कलाई पर राखी बाँध रही थी। उस वक़्त दरवाज़ा खुला और गोपाल दाख़िल हुआ। उसने लड़की को, जिसकी पीठ उसकी तरफ़ थी, और समझा, कि उसका दोस्त अपनी महबूबा से खुफ़िया मुलाक़ात कर रहा है।

'सॉरी अमर भैया !' गोपाल बोल उठा, 'मैं फिर किसी वक़्त आऊँगा।'

अमर ने हँसते हुए कहा, 'ये तो इन्दू है।'

'इन्दू, ये मेरा दोस्त गोपाल है।'

इन्दू ने पलटकर गोपाल को देखा तो घबरा-सी गयी जिसने एक रात उसको अनाज चुराते हुए पकड़ ही लिया था—बग़ैर बँधी हुई राखी उसके हाथ से गिर पड़ी।

यह सब देखकर पहले तो गोपाल हैरान हुआ, फिर मुस्कराया।

'ये सब क्या हो रहा है ?' गोपाल ने पूछा।

'ये मुझे राखी बाँधने आयी है—रक्षाबन्धन के दिन वहनें भाइयों के राखी बाँधती हैं। क्या तुम्हें नहीं मालूम ?'

'मैं क्या जानूँ ?' गोपाल ने अपनी आवाज़ में कुछ तल्ख़ी से कहा, 'मेरी कोई बहन ही नहीं है।'

जब इन्दू ने अमर के राखी बाँध दी तो अमर ने उसे दो रुपये का नोट दिया।

इन्दू बाहर जाने के लिए पलटी, तो गोपाल ने कहा, 'क्या मेरे भी राखी बाँधोगी ?'

इन्दू ने इन्कार करते हुए कहा, 'नहीं, मेरे पास एक ही राखी थी।'

'तो तुम दोनों एक-दूसरे को जानते हो ? कब मिले तुम ?'

'कब मिले ?' गोपाल बोल पड़ा, 'हम मिले जब वो···और मैं···'

'मछली पकड़कर···' इन्दू ने कहा और फिर वह झोंपड़ी से भाग गयी।

'ये मछली पकड़ने का क्या क़िस्सा है ?'

तब गोपाल ने अमर को बताया किस तरह उसने इन्दू को ट्रक से अनाज चुराते हुए पकड़ा था।

अमर बोला, 'हाँ, उसका बाप लँगड़ा है। बैसाखियों के सहारे से चलता है। एक एक्सिडेंट में उसके पाँव कुचले गये थे। वह महीने में एक बार आता है पचास रुपये की पेंशन वसूल करने। महीने-भर की पेंशन दो-चार दिन में शराब पीकर उड़ा देता है। और फिर ये काम इन्दू को करना पड़ता है।'

फिर गोपाल की तरफ़ देखकर बोला, 'लेकिन तुमने उसे क्यों नहीं पकड़वा दिया ? तुम्हें एक स्पेशल बोनस मिल जाता—क्या होता अगर एक ग़रीब लड़की पकड़ी जाती—तुम्हें स्पेशल बोनस नहीं चाहिए···'

'कभी-कभी मुझे ऐसा महसूस होता है कि मुझे इसकी इतनी ज़रूरत नहीं अमर भैया ! लेकिन मुझे ये समझ में नहीं आता कि हमारे सेठ साहब को इतने से अनाज की क्यों फ़िक्र लगी रहती है ?'

'ये बात तो मेरी भी समझ में नहीं आयी ?' अमर ने कहा।

बाबू भाई की गाड़ी उसके बंगले के गेट से बाहर निकल रही थी। गोपाल अन्दर आया, पूर्वी भाषा में चौकीदार से बोला, 'मेरा नाम गोपाल होवत है।'

'मिस मालती आपका इन्तज़ार करत है।' चौकीदार ने कहा और उसको एक दूसरे नौकर के हवाले कर दिया, 'गोपालजी को मिस साहब के पास ले जाओ।'

नौकर गोपाल को मकान की तरफ़ ले गया जो शानदार तरीक़े से सजाया हुआ था।

ड्राइंग रूम में को होकर वे एक लिफ़्ट के पास आये। लिफ़्ट उनको तीसरी मंज़िल के टेरेस पर ले गयी।

सुबह-सवेरे सूरज की रोशनी में मालती बेंत की कुर्सी पर बैठी हुई थी। उसके क़रीब ही चाय और दूसरी चीज़ें, अख़बार वग़ैरा मेज़ पर रखे

हुए थे। टेरेस पर एक झूला भी पड़ा हुआ था।

'हैलो गोपाल!' मालती गोपाल का स्वागत करने के लिए उठ खड़ी हुई।

'नमस्ते मालतीजी!' गोपाल ने बड़े अदब से मालती को नमस्ते किया।

'तुम जा सकते हो।' मालती ने नौकर से कहा, 'चाय और भिजवा देना।'

'सलाम मिस साहब!' नौकर ने कहा और चला गया और पीछे पलटकर गोपाल को देखता गया।

'बैठ जाइये।' मालती ने गोपाल से कहा।

गोपाल अदब से बैठ गया।

'कहो गोपाल, कल का सबक़ याद किया?'

'जी मिस साहब!'

'दिखाओ।'

उसने अपनी नोटबुक खोली और उसे दिखायी।

उसने बार-बार 'गोपाल! गोपाल!' के दस्तख़त किये हुए थे।

'बहुत अच्छा—आज पढ़ने की मश्क़ करो—मेरे साथ बोलो।'

फिर उसने किताब से पढ़ना शुरू किया और गोपाल उसके बाद दोहराता गया।

''आ' से आदमी—जैसे तुम।'

''ब' से बकरी! जैसे···'

दोनों हँस पड़े।

''ज' से जलेबी···'

''ज' से जलेबी—मैं जलेबी खाऊँगा!'

'तुम मेरा सर खाओगे।'

'ज़रूर खाऊँगा!' वह एकदम बोल पड़ा, फिर अपनी ग़लती को महसूस करते हुए कहा, 'क्षमा कीजिये, मिस साहब!'

''ग' से गोपाल।'

''ग' से गोपाल—यानी मैं।'

"'म' से···' वह बोली और रुक गयी ।

"'म' से···'म' से···'म' से···मालती ।' वह हिचकिचाते हुए बोल पड़ा ।

जब वह मुस्कराने लगी तो वह इधर-उधर देखने लगा ताकि अपनी परेशानी को छुपा सके—उसकी नज़र टेरेस के दूसरे किनारे पर रखी हुई एक अजीब-सी चीज़ पर जाकर जम गयी ।

'मिस साहब, वो क्या है ? तोप ? मशीनगन ?'

'नहीं', वो ज़ोर से हँसी, 'वो दूरबीन है, उसमें से देखो तो दूर की चीज़ को पास ले आती है ।'

'मैं देखूँ, मिस साहब ?'

वह मालती के साथ टेलिस्कोप के पास गया जो एक लकड़ी के स्टैंड पर जड़ी हुई थी ।

टेलिस्कोप के बारे में गोपाल की व्याकुलता को देखकर मालती मुस्करा रही थी ।

गोपाल ने उसमें देखा । मालती उसको ठीक करने लगी । गोपाल खुश होकर चिल्लाया, 'वो देखो—मिस साहब, दूर समन्दर में किश्ती बिलकुल पास आ गयी है !'

'इससे काकाजी आधी रात को चाँद-सितारों को देखते हैं ।'

'चाँद-सितारों में क्या धरा है ? ज़मीन पे देखने की कम चीज़ें हैं ?'

'जैसे ?' मालती ने पूछा ।

'जैसे' गोपाल ने मालती के गुलाब के फूल जैसे ख़ूबसूरत चेहरे की तरफ़ देखकर कहा, 'जैसे गुलाब का फूल, संगमरमर के पवित्र मन्दिर, इठलाती हुई समन्दर की लहरें और उन पर डोलती हुई किश्ती—जैसे समन्दर में वो किश्ती डोल रही है ।'

अपने जज़बात को छुपाने के लिए गोपाल दोबारा टेलिस्कोप में झाँककर देखने लगा—उसने समन्दर में एक बोट को आते हुए देखा ।

७

लिपस्टिक का निशान

एक बिजली के फ़ानूस के नीचे एक डाइनिंग टेबिल सजी हुई थी। मगर खाने वाले दो ही थे।—बाबू भाई और मालती।

'कहो मालती बस्ती में तुम्हारा स्कूल कैसा चल रहा है?'

'बहुत अच्छा चल रहा है काकाजी। अब तो हमारे यहाँ एक सौ ग्यारह बच्चे पढ़ते हैं, मगर उनमें से ग्यारह बच्चे सिर्फ़ एक आदमी फ़ज़लू चाचा के हैं।'

इस पर बाबू भाई हँसा।

'मगर दिलचस्प बात ये है काकाजी कि वह गोपाल है ना जिसने मेरी जान बचायी थी वह भी पढ़ने आता है।'

'अरे वाह! वह भी बच्चों के साथ बैठकर पढ़ता है?'

'पहले दिन जब वह स्कूल में आया तो बच्चों ने उसका मज़ाक़ उड़ाया। बड़ा शरमाया। इसलिए मैंने कह दिया था कि मैं उसे यहाँ पढ़ा दिया करूँगी। दो दिन से वह यहीं आ रहा है।'

'यहाँ, घर पर!' बाबू भाई थोड़ा परेशान हो गया लेकिन उसने ऐसा कुछ ज़ाहिर नहीं किया। बात को ज़रा सँभालते हुए उसने कहा, 'बेटी, ये तुम्हारा समाज सुधार का काम हमारे-तुम्हारे लिए कहीं खतरा पैदा न कर दे?'

'ख़तरा! कैसा खतरा काकाजी?'

बाबू भाई ने कहा, 'मेरा मतलब था कि वह घर की कोई चीज़ उठाकर न चलता बने?'

मालती ने हँसी का एक क़हक़हा लगाकर इस ख़याल को ख़त्म कर दिया था।

'नहीं काका, गोपाल ऐसा नहीं है। बड़ा ईमानदार है। फिर आपकी बड़ी इज़्ज़त करता है और बड़ा भोला है। आज मैं उसे टेरेस पर पढ़ा रही थी।'

'कहाँ पढ़ा रही थीं ?' उसने चौंककर पूछा।

'ऊपर टेरेस पर', मालती ने दोहराया। वह जानना चाहती थी काका ये सुनकर बेचैन क्यों हो गये, 'वह तो इतना भोला-भाला है कि आपकी दूरबीन देखकर पूछने लगा कि ये क्या है और किस काम आती है ?'

'वह मेरी टेलिस्कोप तक पहुँच गया—क्या तुम पागल हो गयी हो ?'

वह आप-ही-आप बड़बड़ाता हुआ खड़ा हो गया। मालती को अफ़सोस हुआ कि ख़ामख़ाह अपने काका के ग़ुस्से को भड़का दिया।

कुछ सेकिंड के बाद ही बाबू भाई ने अपने ग़ुस्से पर क़ाबू पा लिया था, 'मेरा मतलब ये है बेटी कि ग़ैर आदमी को घर में लाने से पहले सोच लेना चाहिए—इतनी नाज़ुक और क़ीमती चीज़ है, उसको लापरवाही से तोड़-फोड़ दे तो ?'

'जी', मालती कुछ उदास-सी होकर खड़े होते हुए बोली, 'अब मैं उसे ऊपर कभी न आने दूँगी ! आप इतमिनान रखिये !'

बाबू भाई का चेहरा कुछ अजीब-सा नज़र आ रहा था जिस पर तनाव, फ़िक्र और ग़ुस्सा था। आहिस्ता-आहिस्ता उसने चेहरे पर ज़बरदस्ती मुस्कराहट पैदा की जो डरावनी भी थी और तल्ख़ भी।

अमर बस्ती से गुज़र रहा था। वह इन्दू की झोंपड़ी के पास आया तो एक आवाज़ ने उसका स्वागत किया।

'अमर भैया ! अमर भैया ! अन्दर आ जाइये !'

'क्या बात है इन्दू ? एक और राखी बाँधना चाहती हो क्या दो रुपये पाने के लिए ?'

'नहीं, तुम्हें पता नहीं उन दो रुपयों का क्या हुआ ? बापू ने छीन

लिए और दारू पीने चले गये।'

'बड़े अफ़सोस की बात है सखाराम इतना अच्छा मज़दूर होके इतना गिर सकता है ? क्या तुम अपने बाप के बारे में मुझसे कुछ कहना चाहती हो ?'

'नहीं', वह शरमाते हुए बोली, 'मुझे आपसे कुछ कहना है लेकिन बापू के बारे में नहीं।' फिर उसने कहा, 'वह तुम्हारा कौन दोस्त था जो तुम्हारे घर आया था ?'

'अच्छा वह ! वह गोपाल था—मेरा बहुत पुराना दोस्त है।'

'वह कैसा आदमी है ?' इन्दू ने पूछा।

'बहुत बुरा !'

'सच !' उसने मज़ाक़ को सच समझते हुए कहा।

'नहीं, मैं तो मज़ाक़ कर रहा हूँ—लेकिन एक तरह से ये ठीक भी है।' अमर बोला, 'वह बहुत अच्छा आदमी है लेकिन जो अच्छापन उसमें है वह उसे नहीं पहचानता—वह एक ऐसा आदमी है जिसमें बहुत बड़ी ताक़त छिपी हुई है, लेकिन वह उस ताक़त को नहीं जानता—वह बड़ा ज़हीन आदमी है लेकिन वह अपनी अक़्ल को नहीं पहचानता जो उसके दिमाग़ में छिपी हुई है। वह दस भाषायें बोल सकता है और ये सब डौक्स के मज़दूरों से उसने सीखी हैं लेकिन वह एक शब्द भी नहीं लिख सकता किसी भाषा का। ऐसे आदमी को तुम क्या कहोगी ?'

इन्दू ने एक लम्हे के लिए सोचा और बोली, 'आपकी आधी बातें मेरी समझ में नहीं आयीं लेकिन मेरा ख़याल है, आपका मतलब है वह एक बहुत बड़े जहाज़ की तरह है जो समन्दर में कहीं भी जा सकता है लेकिन वह साहिल पर खड़ा है क्योंकि वह नहीं जानता कि उसे किधर जाना है ?'

'बिलकुल ठीक इन्दू। हक़ीक़त में हम सब साहिल पर खड़े हैं क्योंकि हम गहरे समन्दर में जाने से डरते हैं।'

गोपाल की खोली (झोंपड़ा)—

गोपाल ने अपनी खोली की दीवार से नंगी तस्वीरें फाड़कर फेंक दी

थीं और अब वह उस जगह कोयले से लिख रहा था—मालती ! मालती !! मालती !!!

एक नौजवान पड़ोसी अन्दर आया और सेठ की भतीजी का नाम लिखा देखकर गोपाल का मज़ाक़ उड़ाया।

'अबे वाह', पड़ोसी गोपाल की तरफ़ पलटा, 'तो तू पूरा मजनू बन गया है !—लैला लैला पुकारूँ मैं बन में—पर देख बेटा, सेठ की छोकरी से इश्क़-विश्क़ करेगा तो साले जूते पड़ेंगे जूते···'

'क्या बक रहा है बे ?' गोपाल ने अपने दोस्त के बात करने के अन्दाज़ को पसन्द नहीं किया।

'मिस मालतीजी तो मेरी गुरु हैं—उनका मैं बड़ा आदर करता हूँ—उनके बारे में ख़बरदार अगर कभी ऐसी-वैसी बात कही तो—वह मेरी गुरु हैं, गुरु ! समझा।'

नौजवान ने फ़िकरा कसा, 'गुरुजी कौन-सा शास्त्र पढ़ावे है ?—प्रेम-शास्त्र ?'

इस बेहूदा रिमार्क पर गोपाल ने उस आदमी को पकड़ लिया, 'मार डालूँगा साले अगर अब मालती के बारे में कोई गन्दी बात मुँह से निकाली।'

'अरे माफ़ करना यार···मैं तो मज़ाक़ कर रहा था।'

'मज़ाक़ कर रहा था !' गोपाल ने दोहराया और उसे ज़ोर का धक्का दिया।

अभी तक ग़ुस्से में भरा गोपाल बस्ती से गुज़रने लगा, अपनी किताबें और कापियाँ लेकर। लेकिन यहाँ भी दुनिया की ज़बानों ने उसका पीछा नहीं छोड़ा।

'क्यों गोपाल ? तेरी राधा कहाँ है ?'

'अबे सेठ की छोकरी से प्यार करेगा तो जूते खायेगा जूते।'

'अबे किताब लेकर क्या प्रेमशास्त्र का पाठ पढ़ने जा रहा है !'

'कौआ चला हंस की चाल—अपनी भी गया भूल !'

इन फ़िकरों का ख़याल किये बिना गोपाल तेज़ी से आगे बढ़ता गया।

वह बाबू भाई के बंगले तक पहुँच गया था। वह अन्दर जाना चाहता था लेकिन जा नहीं सका।

आवाज़ें—फ़िकरे जो पड़ोसियों ने उस पर कसे थे, भूत की तरह उसका पीछा करते रहे।

वह देर तक मालती के घर को देखता रहा—फिर वह पलटा।

उस रात वह सेलर ब्वाय बार में था।

पीता रहा। ख़ूब पीता रहा।

यहाँ तक कि वह मदहोश हो गया। जब रोज़ी उसके पास आयी तो उसने बड़े जोश से उसका स्वागत किया।

'हैलो डार्लिंग !' वह आप-ही-आप बोला।

'हैलो स्ट्रेंजर', वह नाक-भौं चढ़ाकर बोली, 'सुना है आजकल किसी सेठ की छोकरी के चक्कर में हो मेरी जान !'

'सेठ की छोकरी पर लानत भेजो जी—तुम यहाँ बैठो—कुछ पियोगी ?'

'तुम्हारे गिलास में से सिर्फ़ एक घूँट।' उसने कहा और उसके गिलास में से एक घूँट पिया और गिलास के हलक़े पर उसकी लिपस्टिक का निशान पड़ गया। वह उस निशान की तरफ़ इशारा करते हुए खड़ी हुई और बोली, 'ये मेरी निशानी तुम्हें मेरे प्यासे होठों की याद दिलाती रहेगी—यहीं बैठे रहना मैं अभी कपड़े बदलकर आती हूँ।'

वह चली गयी—गोपाल को उसके गिलास के साथ छोड़कर। वह एक घूँट लेना चाहता था। गिलास के किनारे पर रोज़ी की लिपस्टिक लगी देखकर रुक गया।

उसी वक़्त एक अधेड़ उम्र का आदमी उसकी मेज़ पर आकर बैठ गया, 'क्यों काका ?' गोपाल उससे सम्बोधित हुआ, 'क्या हाल है ?'

'उत्सव में चलता है ?'

'उत्सव ! कैसा उत्सव ? कहाँ है उत्सव ?'

'अपनी बस्ती में—तूने नहीं सुना। सेठ साहब ख़ुद आयेंगे। उनकी

भतीजी मालती भी आयेगी…'

नशे में मदहोश गोपाल समझा कि वो उस पर फ़िक़रा कस रहा है। उसने सख़्ती से आदमी का कॉलर पकड़ लिया और चिल्लाया, 'मालती देवी का नाम मत लो !'

'अरे भाई तू तो बहुत पी गया है गोपाल ! मैं तो चलता हूँ। उत्सव में आना है तो आ जाना—नाच होगा—गाना होगा—बड़ा मज़ा आयेगा ।'

ये कहकर उसने आख़िरी घूँट हलक़ में उतारा, गिलास को रखा और चला गया ।

इतने में रोशनियाँ मद्धम हो गयीं और आर्केस्ट्रा की आवाज़ बुलन्द हुई—रोज़ी का कैबरे प्रोग्राम शुरू हो चुका था ।

रोज़ी इन्तहाई ख़ुशी के आलम में मस्त होकर नाच रही थी क्योंकि गोपाल—उसका गोपाल—उसके पास आ चुका था ।

लेकिन मदहोश और प्यार में डूबी हुई गोपाल की आँखों में रोज़ी नहीं थी जो नाच रही थी ।

उसके कैबरे की सस्ती हरकतों में वह मालती को नाचता हुआ देख रहा था ।

वह उसको तरसा रही थी—

वरग़ला रही थी—

लुभा रही थी—

पुकार रही थी—

इशारों से बुला रही थी—

और फिर कैबरे ख़त्म हो गया ।

रोशनियाँ हो गयीं और मालती फिर से रोज़ी हो गयी ।

अपना काम ख़त्म करके रोज़ी ख़ुश-ख़ुश, चमकती-दमकती उस मेज़ के पास आयी जहाँ कुछ ही देर पहले गोपाल बैठा था लेकिन अब वह उसे वहाँ नज़र न आया, सिर्फ़ वह गिलास टेबिल पर रखा था जिसमें शराब अभी तक थी, उतनी ही जितनी उसके एक घूँट पीने के बाद थी। और उस गिलास के किनारे पर उसके लिपस्टिक के निशान मौजूद थे ।

८

सोने के 'बिस्कुट' कौन खा गया ?

झोंपड़पट्टी में उत्सव किसी भी बहाने हो सकता है—रक्षाबन्धन हो या वैशाखी, हिन्दुओं का त्यौहार हो या मुसलमानों का, महाराष्ट्र का 'गोविन्दा आला' हो या पंजाबी भंगड़ा—उसमें झोंपड़पट्टी के मज़दूरों की सारी मिली-जुली आबादी शामिल हो जाती है- -महाराष्ट्रियन, गुजराती, पंजाबी, तमिल, तेलुगू, मलियाली सबके सब हिस्सा ले रहे थे।

प्रोग्राम देखने वालों में सेठ बाबू भाई, मिस मालती (जिसकी आँखें गोपाल को देख रही थीं), रंजीत जो मालती की आँखों का जायज़ा ले रहा था और अमर जो इस प्रोग्राम का इन्तज़ाम कर रहा था।

'भाइयो और बहनो!' अमर प्रोग्राम देखने के लिए आने वालों से सम्बोधित होकर बोला, 'मैं आप सबकी तरफ़ से सेठ बाबू भाई और उनकी भतीजी मिस मालतीजी का शुक्रिया अदा करता हूँ—सेठजी को तो हम बरसों से एक हमदर्द की हैसियत से जानते हैं मगर मालती देवी ने भी अपना स्कूल चलाकर जहाँ वे हमारे बच्चों को पढ़ाती हैं, हर मज़दूर के दिल में अपना घर बना लिया है...।'

ये आख़िरी शब्द उस वक़्त कहे गये जब मदहोश गोपाल मजमे में दाखिल होकर उन लोगों में शामिल हो गया था।

अब अमर कह रहा था, 'सेठजी को कम्पनी के काम से जाना है मगर मैं मालती देवी से प्रार्थना करूँगा कि वो सेठजी की तरफ़ से उत्सव में हमारे साथ शरीक रहें—अब मैं सेठजी से दरख्वास्त करूँगा कि वे दो शब्द आप लोग से कहें...।'

सेठ बाबू भाई तालियों के शोर में उठकर खड़ा हो गया।

'भाइयो और बहनो', उसने कहना शुरू किया, 'आपने तो सुना होगा—सेठ बड़ा पेट—यानी सेठ का बड़ा पेट होता है।' फिर उसने अपने सपाट पेट की तरफ़ इशारा किया, 'क्या आपको मेरा पेट बड़ा दिखायी देता है?'

'नहीं, नहीं!' मज़दूरों की आवाज़ एक साथ निकली।

'तो मुझे सेठ न समझिये। अपना भाई, अपना साथी समझिये।'

मज़दूरों की तरफ़ से तालियाँ।

'आज आपका उत्सव है। इसे बड़ी धूम-धाम से मनाइये—और इस ख़ुशी के अवसर पर अपनी कम्पनी में काम करने वालों को मैं एक महीने के बोनस का ऐलान करता हूँ।'

तालियों का शोर और आवाज़ें—'सेठ बाबू भाई की जय!'

'सेठ बाबू भाई की जय!'

रंजीत और उसके आदमी नारे लगा रहे थे जिनमें भोले-भाले मज़दूर भी शामिल थे।

फिर सेठ ने अपनी तक़रीर यूँ ख़त्म की, 'अब मैं आपसे आज्ञा लूँगा—मैं जिस काम से जा रहा हूँ वह आप ही का काम है—आपकी कम्पनी का काम है, आपके देश का काम है—(तालियाँ)—मेरी भतीजी मालती देवी जिसने इस साल बी० ए० का इम्तिहान दिया है और अपने कॉलिज में लोकनृत्य के लिए स्वर्ण-पदक प्राप्त किया है, वो मेरी तरफ़ से आपकी ख़ुशी में शरीक रहेगी…।'

मालती ने उलझन-सी महसूस की।

मदहोश गोपाल ने बेवक़ूफ़ी से तालियाँ बजायीं।

इन्दू बस्ती की लड़कियों से कानाफूसी करती है जो लोकनृत्य के लिए तैयार हैं।

सेठ और रंजीत चले गये।

::

कार में रंजीत ने सेठ से कहा, 'सेठजी, एक बात समझ में नहीं

आयी ? आपको एक महीने के बोनस का ऐलान करने की क्या ज़रूरत थी ? अभी तो मज़दूरों ने माँग भी नहीं की थी !'

'तुम आज की सोचते हो रंजीत—हम आगे की सोचते हैं। मैं जानता हूँ दूसरी कम्पनियों के मज़दूर तीन महीने का बोनस माँगने वाले हैं। बिना माँगे हमने एक महीने का बोनस देकर अभी से उसकी रोक-थाम कर दी। और फिर आज की रात जब सब नाच-गाने में मगन होंगे हम अपना काम बड़े इतमिनान से कर सकेंगे। आज की रात तक़दीर ने साथ दिया तो हम करोड़पती बन जायेंगे।'

बस्ती में नाच-गाना जारी था।

जवान मर्दों और औरतों की टोलियाँ अपने-अपने इलाक़े के लिबास में अपने-अपने रंग में नाचने के लिए आगे आ रही थीं।

अब वे मुखतलिफ़ ज़बानों के बोलों और तानों में मुखतलिफ़ ग्रुप कोरस की शकल में गा रहे थे।

सिर्फ़ एक ही आदमी था जो हर गाने में शामिल हो सकता था और वो गोपाल था, जो मदहोशी के आलम में भी हर गाने और नाच में शामिल हो जाता था।

नाचते हुए इन्दू ने मालती से हाथ बाँधे हुए प्रार्थना की कि वह भी नाचने वालों में शामिल हो जाये।

मालती नाचना नहीं चाहती थी लेकिन जब मदहोश गोपाल ने चिल्लाकर कहा, 'आओ मिस साहब आओ··· कॉलिज में डांस करती हो··· हम मज़दूरों के साथ भी नाचकर देखो···।'

मालती ने इस रिमार्क को चेलेंज समझकर क़बूल कर लिया और डायस से नीचे उतर आयी नाचने वालों में शामिल होने के लिए।

इसके बाद गाने ने गोपाल और मालती के दरम्यान एक डुवेट की शक्ल इख़्तियार कर ली जिसमें दोनों ने अपने जज़बात का इज़हार किया।

इन्दू ने मौक़ा महौल का जायज़ा लिया। नाउम्मीदी महसूस की और नाच-गाने से ख़ुद को अलग कर लिया। उसकी आँखों में आँसू भर आये।

वह वहाँ से भाग गयी।

गाने के म्यूज़िक के टुकड़ों पर सेठ, रंजीत और उनके आदमियों की स्मगलिंग की हरक़तों को बताया और दिखाया गया।

अनाज की बोरियाँ ट्रकों पर चढ़ायी जा रही थीं। उनमें बहुत-सी बोरियाँ ऐसी भी थीं जिन पर क्रास (×) का निशान बना हुआ था।

ट्रक अँधेरी गलियों से गुज़र रहे थे।

सेठ की मौजूदगी में अब ट्रकों से बोरियाँ उतारी जा रही थीं।

नाच और गाना क्लाइमेक्स पर पहुँच गया—गोपाल और मालती एक-दूसरे के क़रीब आ गये।

एक बोरी जिस पर क्रास (×) का निशान बना हुआ था, ज़मीन पर फेंकी गयी। जब वे बोरी की तरफ़ पलटे तो देखा कि पहले ही से उस बोरी को चाकू से फाड़ा गया है।

सेठ ने तेज़ी से हाथ डालकर बोरी में कुछ तलाश किया, लेकिन उसका हाथ खाली बाहर आया।

अब सेठ रंजीत पर भड़क पड़ा, 'कौन ज़िम्मेदार है इसका ?—इससे पहले भी एक बोरी फटी हुई थी लेकिन वह बग़ैर निशान के थी—लेकिन आज किसी ने निशान वाली बोरी को फाड़ दिया है, और सोना ग़ायब है—हमारा सोना—हमारा सोना...'

रंजीत ने सेठ से कहा, 'इतनी ज़ोर से मत बोलिये सेठजी—आप फ़िक्र न कीजिये। मैं पता चला लूँगा। मुझसे बचकर कोई नहीं जा सकता।'

सेठ ने उसको मौक़े की नज़ाकत से वाक़िफ़ कर दिया, 'ये सोने के बिस्कुटों का सवाल नहीं है। इसका मतलब है कोई हमारा भेद जानता है—कौन जानता है—हो सकता है सी० आई० डी० हो या सी० बी० आई०, तुमको बहुत एहतियात से काम करना होगा।'

'मैं आपसे वादा करता हूँ, मैं पता चलाऊँगा सेठ साहब लेकिन आप भी अपना वायदा याद रखिये !'

'कौन-सा वायदा ! ...ओ...मालती...हाँ-हाँ ठीक है...तुम ही उससे शादी करोगे !'

'सेठ साहब, मुझे मालती का उस गोपाल के बच्चे से इस तरह यूँ

बेतकल्लुफ़ हो जाना बिलकुल पसन्द नहीं।'

'तुम उसकी फ़िक्र न करो। वह काम का आदमी है। मुमकिन है उसके जरिये ही हमें कुछ पता चल जाये ! पता लगाओ इस सोने के बारे में कौन जानता है।' और फिर अपने हाथ को गले की तरफ़ ले जाकर इशारे से उसको बताया, जैसे गला काट रहा हो, 'उसे ख़त्म कर दो।'

उस वक़्त इन्दू अपनी झोंपड़ी में दाखिल हो रही थी।

'क्यों री ?' उसके बाप ने, जो उसका बेकरारी से इन्तज़ार कर रहा था, उससे पूछा, 'नाच का प्रोग्राम तो कभी का ख़त्म हो गया···तू कहाँ थी—बोलती क्यों नहीं···?'

इन्दू ने अपने पीछे कुछ छुपाने की कोशिश करते हुए कहा, 'बाबा आज भी ट्रकें भरी हुई जा रही थीं, इसलिए मैंने सोचा शायद कुछ हाथ लग जाये।'

बूढ़े के चेहरे पर इतमिनान की लहर दौड़ गयी, 'तो कुछ मिला ?'

'अनाज का तो एक भी दाना नहीं ला सकी···।' वह हिचकिचाते हुए बोली।

'तो फिर क्या मिला है ?' उसने पूछा और जब इन्दू ने फ़ौरन जवाब न दिया, तो ग़ुस्सा करते हुए बोला, 'अरी बोल···क्या मिला है आज ?'

'आज तो बाबा ये मिले हैं।' और ज्यों ही वह अपने छुपे हुए हाथ पीछे से आगे लायी तो उसके हाथों में दो चमकते हुए सोने के बिस्कुट थे।

सखाराम को अपनी आँखों पर यक़ीन नहीं आया। उसको समझने के लिए थोड़ा वक़्त लगा।

'सोना !' उसने पहले तो आहिस्ता से सरगोशी के अन्दाज़ में कहा, फिर ज़रा ज़ोर से दोहराया, 'सोना ! अरी कम्बख़्त, क्या स्मगलिंग के लिए बड़े घर की हवा खिलायेगी ? ये बेचने के लिए जाऊँगा तो पुलिस सीधी मुझे जेलखाने ले जायेगी। इसका मैं क्या करूँगा ?'

'बाबा मैं तो ख़ुद सोना देखकर घबरा गयी थी। मैं तो सिर्फ़ दो-चार सेर दाने चुराने गयी थी। बोरी में चाकू मारा तो ये सोने के टुकड़े मेरे

आँचल में आ गिरे···!'

'मगर उसमें ये आये कहाँ से और कैसे ?'

जब बाबू भाई घर में दाख़िल हुए तो खाने की मेज़ पर मालती को अपना इन्तज़ार करते हुए पाया।

वह बहुत ख़ुश नज़र आ रही थी।

लेकिन बाबू भाई का मूड बिगड़ा हुआ था।

'हैलो काका !' उसने अपने चाचा का स्वागत किया।

'हैलो मालती !' उसने खाने की मेज़ पर उदासी के आलम में बैठते हुए जवाब दिया। नौकर शाम का खाना लाने की तैयारी कर रहे थे, 'तुमने खाना खा लिया होता ! मैंने कितनी बार कहा है मेरा इन्तज़ार न किया करो···।'

'कोई बात नहीं काकाजी···मैं भी अभी आयी हूँ। बस्ती के उत्सव में बड़ा मज़ा आया। सचमुच ये लोग बड़ा एन्ज़ॉय करते हैं···उन्होंने अपने नाच-गाने में मुझे भी घसीट लिया था।'

'तुम भी नाचीं ?' पहले तो वह ग़ुस्से में बोला फिर ग़ुस्से को दबाते हुए होंठों पर मुस्कराहट लाते हुए बोला, 'अच्छा किया···मालिकों को अपने मज़दूरों के समाजी जीवन में दिलचस्पी ही नहीं बल्कि हिस्सा लेना चाहिए···।'

'बाई द वे काकाजी···वह गोपाल है न वह तो बहुत अच्छा गाता है। आज तो वह मेरे साथ नाचा भी ख़ूब !'

बाबू भाई के हाथ से चमचा शोरबे की प्लेट में गिर गया और एक आवाज़ पैदा हुई।

'तुम उस दो कौड़ी के कुली के साथ नाचीं ? वे लोग ख़ूब हँसते होंगे—मालिक की भतीजी एक कुली के साथ नाच रही है।'

मालती उसको ग़ुस्से में बिफरा देखकर सहम गयी।

'काकाजी ! मैं सच कहती हूँ काकाजी मुझे तो मालिक और मज़दूर में कोई अन्तर है, इसका ख़याल भी नहीं आता। मुझे तो सब इन्सान नज़र

आते हैं···।'

'वह बेवक़ूफ़ भी यही कहता था।'

'कौन काकाजी ?'

'तुम्हारा बाप और मेरा भाई—हमेशा कहा करता था—मज़दूर-मालिक भाई-भाई हैं—आखिर मज़दूरों ने एक दिन उसको मार डाला।'

'काकाजी ये आप क्या कह रहे हैं ?'

'मैं सच कह रहा हूँ—उसके सर पर सैकड़ों टन की भारी बोरियाँ गिरा दीं—कह दिया एक्सिडेंट हो गया है !'

मालती जैसे सोच में गुम थी। फिर वह अपने-आप से कहने लगी, 'मगर गोपाल ऐसा नहीं हो सकता। वह तो आपकी बड़ी इज़्ज़त करता है।'

बाबू भाई ने ऊपर की तरफ़ देखा—उसकी आँखों में कुछ अजीब तरह के जज़बात थे। वह बोला, 'बेटी, यही तो दुनिया में नहीं मालूम कौन दोस्त है कौन दुश्मन ?'

जज़बात की एक झलक उसके चेहरे पर थी जो पागलपन से मिलती-जुलती थी।

जब मालती ने उसके चेहरे को देखा तो उसकी अपनी आँखों में एक डर छा गया—और परेशानी भी !

९

वीरान साहिल के किनारे

चाल के बराबर में गोपाल बीड़ी पी रहा था। एक घूँघट वाली, मगर जानी-पहचानी शक्ल उसके पास से गुज़र गयी।

वह इन्दू थी और गोपाल को वहाँ खड़ा देखकर घबरा-सी गयी थी।

इतनी रात गये इन्दू को अमर के कमरे की तरफ़ जाते हुए देखकर गोपाल को ताज्जुब हुआ क्योंकि अमर तो एक ब्रह्मचारी धर्मात्मा समझा जाता था!

गोपाल ने अमर के कमरे की तरफ़ एक क़दम बढ़ाया, ये जानने के लिए कि आख़िर मामला क्या है? फिर वह ख़ुद रुक गया—जैसे कह रहा हो—'मैं कौन होता हूँ दख़ल देने वाला?'

अमर अपने कमरे में सोने की तैयारियाँ कर रहा था।

किसी ने दरवाज़ा खटखटाया।

'कौन है?' अमर ने आवाज़ दी, 'अन्दर आ जाओ—ये दरवाज़ा कभी बन्द नहीं होता!'

इन्दू को देखकर उसकी हैरत की कोई इन्तहा न रही थी।

'इन्दू—तुम यहाँ!—इस वक़्त?'

'हाँ अमर भैया—बात ही कुछ ऐसी थी मैं सुबह तक इन्तज़ार न कर सकी।'

'तो बैठो—कहो क्या बात है?'

इन्दू डरते हुए कहने लगी, 'दरवाज़ा बन्द कर दीजिये।'

'तुम जानती हो इन्दू मैंने आज तक ये दरवाज़ा बन्द नहीं किया।'

'बात ही ऐसी है अमर भैया !'

अमर को कुछ शुबः हुआ। वह बिगड़ उठा, 'अमर भैया! और दरवाज़ा बन्द करने को कहती हो—चली जाओ अपने घर—या मैं तुम्हें छोड़ आता हूँ।'

आख़िरकार इन्दू सोने के बिस्कुट निकालने पर मजबूर हो गयी और ख़ामोशी से अमर को दिखाने लगी।

अब अमर को इन्दू के आने का मक़सद मालूम हो गया। उसने दरवाज़ा बन्द कर दिया।

ज्यों ही दरवाज़ा बन्द होने की आवाज़ आयी, गोपाल पर उसका रद्दे-अमल हुआ।

कुछ दूसरे पड़ोसी भी, जो बरामदे में बैठे ताश खेल रहे थे, अमर के कमरे की तरफ़ शक की निगाहों से देखने लगे।

दरवाज़ा बन्द करके अमर अन्दर की तरफ़ पलटा।

'ये कहाँ से मिले?' उसने बिगड़कर पूछा, 'अब तुम और तुम्हारा बाप अनाज की चोरी करते-करते सोने की स्मगलिंग भी करने लगे हो।'

'मैंने तो सिर्फ़ अनाज चुराने के लिए बोरी में चाकू मारा था अमर भैया, मगर अनाज के साथ ये भी मेरी झोली में आ गिरे।'

अमर ने पूछा, 'किसका ट्रक था?'

'बाबू भाई का।'

'हूँ—तो ये हमाली का ठेका स्मगलिंग की आड़ है? लाओ मुझे दे जाओ नहीं तो तुम्हारा बाप न जाने कब अपने नशे के लिए बाज़ार में इन्हें बेचने के लिए जाये। मैं सोचूँगा, क्या करना चाहिए। मगर इसका चर्चा न करना, समझी?'

इन्दू ने ख़ामोशी से अपना सर हिलाया—फिर वह बोली, 'तो मैं जाऊँ अमर भैया?'

अमर ने चटखनी खोल दी।

चटखनी खुलने की आवाज़ आते ही बरामदे में बैठे लोगों पर इसका रद्दे-अमल होना चाहिए था, वह हुआ।

अमर इन्दू के साथ बाहर आया।—ख़ामोश बरामदे से गुज़रकर

सीढ़ियाँ उतरने लगा।

ताश खेलने वालों में से एक ने हिकारत से ज़मीन पर थूका, 'बड़ा धर्मात्मा बनता था!'

दूसरे दिन—

डौक्स के इलाक़े में—

अलबेले ढंग से टोपी लगाये, बीड़ी मुँह में दबाये, जैकिट को कन्धे पर लटकाये, गोपाल काम से लौट रहा था—एक कार की आवाज़ ने उसे चौंका दिया। उसने पलटकर देखा।

मालती स्पोर्ट्स कार में बैठी उसकी तरफ़ हाथ हिला रही थी, 'हैलो गोपाल!' वह बोली।

गोपाल गाड़ी के पास गया। हाथ जोड़कर कहा, 'नमस्ते मिस साहब!'

'पढ़ना-लिखना बन्द कर दिया—क्यों?'

'आपने रास्ता दिखा दिया है। अब मैं घर पर ख़ुद ही पढ़ लेता हूँ।'

'ये तो और अच्छा है—चलो, तुम्हें छोड़ दूँ—कहाँ जाना है?'

'कहीं नहीं।'

मालती हँस पड़ी, 'फिर तो अपना रास्ता एक ही है। मैं भी कहीं नहीं जा रही हूँ।' उसने अपने बाज़ू वाली सीट की तरफ़ इशारा किया, 'बैठो!'

'नहीं, मिस साहब।' गोपाल बोला, 'ये कैसे हो सकता है कि आप मोटर चलायें और मैं नवाब की तरह बैठूँ?'

'तो तुम चाहते हो तुम मोटर चलाओ और मैं महारानी की तरह आराम से बैठूँ?'

'जी', गोपाल ने जवाब दिया, 'आप बिलकुल सही समझीं।'

मालती बाज़ू हट गयी और गोपाल ने ड्राइविंग व्हील सँभाल लिया।

कार तेज़ी से आगे बढ़ने लगी।

रंजीत एक कोने में छिपकर उन दोनों को इस तरह बेतकल्लुफ़ी से

बातें करते हुए देख रहा था, मगर उसे मालती और गोपाल नहीं देख सकते थे।

कार तेज़ी से मेरिन ड्राइव की तरफ़ बढ़ रही थी।

चौपाटी—

पेडर रोड—

हाजी अली—

वरली सी फ़ेस—

माहिम बान्द्रा क़ाज़वे—

घोड़बन्दर रोड से मलाड—

और फिर मध आईलैंड!

मालती के बाल हवा में उड़ रहे थे।

वह तेज़ ड्राइविंग का लुत्फ़ उठा रही थी।

वह हँस रही थी।

गोपाल को तेज़ गाड़ी चलाना पसन्द था। लेकिन वह मालती के क़रीब होने की वजह से और तेज़ चलाना चाहता था।

ब्रेक लगाने की ज़ोरदार आवाज़ के साथ गाड़ी मध आईलैंड पर साहिल के किनारे, नारियल के पेड़ों के नीचे जाकर रुक गयी।

गोपाल ने फुर्ती से कार रोकी। बाहर निकला, कार के दूसरी तरफ़ आया, दरवाज़ा खोला, शोफ़र की तरह सलाम किया—और मालती के बाहर आने का इन्तज़ार करने लगा।

'मेम साहब!' वह बोला, 'आ गया आपका कहीं नहीं।'

'और तुम्हारा कहीं नहीं?' मालती ने बाहर निकलते हुए कहा।

'मेम साहब', गोपाल ने अपने काँधों को सिकोड़कर कहा, 'मेरा कहीं नहीं अभी कहीं नहीं है।'

साहिल पर वीरानी-ही-वीरानी और ख़ामोशी-ही-ख़ामोशी है।

नारियल के पेड़—

समन्दर की लहरें—

चाँदी की तरह सफ़ेद रेत, जिस पर उनके क़दमों के निशान पड़ गये थे, जब वे उस पर चलने लगे थे।

ये सब चीज़ें खामोशी से कानाफूसी करते हुए एक पैग़ाम दे रही थीं —

शान्ति का—

ख़ूबसूरती का—-

मुहब्बत का—

अब वे अकेले थे !

एक-दूसरे की तरफ़ देखने से बचते रहे जब तक वे घुटनों-घुटनों पानी में नहीं चले गये।

फिर वे एक साथ ही पलटे एक-दूसरे को देखने के लिए—दोनों एक-दूसरे से कुछ कहना चाहते हैं।

'पहले आप !'

'पहले आप।'

'क्या कहने वाली थीं आप ?'

'कुछ नहीं !'

'और आप क्या कहने वाले थे ?'

'कुछ नहीं।'

फिर वे हँसने लगे—इस बार थोड़ी और बेतकल्लुफ़ी के साथ।

अब वे घुटनों-घुटनों पानी में डूबे हुए थे।

समन्दर की एक गहरी और तेज़ लहर मालती के पाँवों से टकरायी—वह डगमगाई।

गोपाल को उसको सहारा देना पड़ा।

अब वह गोपाल की बाज़ुओं में थी।

उनके चेहरों के दरम्यान सिर्फ़ कुछ इंच का फ़ासला रह गया था। गोपाल के होंठ मालती के होठों पर झुककर आगे बढ़ते हुए नज़र आये।

मालती के होंठ काँपने लगे—क्या वह एक सवाल था या दावत ? एक चेलेंज या इन्कार ? उसने गोपाल की आँखों में झाँककर देखा और बोली, 'जी ?'

गोपाल समझ गया या ग़लत समझा—कि वह इन्कार था। उसने इतना कहा, 'कुछ नहीं मेम साहब।'

फिर उसने मालती को सीधा कर दिया और वह अपने पैरों पे खड़ी हो गयी।

'चलिये मैं आपको घर पहुँचा दूँ।'

कुछ नाराज़-सी और कुछ नाउम्मीद होकर मालती बोली, 'चलो।'

कार में वापस—गोपाल ने व्हील को सँभाल लिया और ग़ुस्से के आलम में कार को स्टार्ट किया।

रास्ते में मालती ने ख़ामोशी को तोड़ा—

'तुम मुझसे कुछ नाराज़ हो ?'

'नाराज़ तो हूँ—मगर आपसे नहीं !'

'फिर किससे नाराज़ हो ?'

'अपने-आप से—अपनी क़िस्मत से—दुनिया से—समाज से ! मगर सबसे ज़्यादा अपने-आप से ! लीजिये मिस साहब आपका घर आ गया।'

और फिर उसने कार को घर के सामने रोक दिया।

मालती उसकी तरफ़ पलटी, 'लो, जो बात कहने आयी थी वो तो अभी तक कही ही नहीं।'

'फ़रमाइये, क्या हुक्म है ?'

'कल शाम को हमारी कम्पनी की वर्थडे पार्टी है—तुम आओगे न ?'

'क्यों, सेठ साहब से मुझे पिटवाना चाहती हैं ?'

'सेठ साहब से मैंने पूछ लिया है—वह कहने लगे, ज़रूर बुलाओ, गोपाल पर हमें बड़ा मान है ! आओगे न ?'

'देखिये, सोचूँगा—ये बात सस्पेंस में रहे तो अच्छा है !'

जब मालती घर में दाख़िल हुई, गोपाल वहीं खड़ा रहा। जब उसको मालूम हो गया कि वह जा चुकी है और उसकी आवाज़ को नहीं सुन सकती, तो वह ख़ुशी से चिल्ला उठा, 'या हू !'

सेलर ब्वाय बार और कैबरे—

गोपाल पी रहा था—रोज़ी को नाचते हुए देख रहा था। अमर इधर-उधर देखते हुए दाख़िल हुआ।

कुछ लोग अमर का मज़ाक़ उड़ाने लगे।

'अरे देखो तो आज कौन आया है यहाँ ?'

'पूज्य धर्मात्मा अमर महाराज आये हैं !'

'अरे ये वही धर्मात्मा हैं न जो आधी रात को छोकरियों को अपने बन्द कमरे में बुलाकर धर्मशास्त्रों की शिक्षा देते हैं !'

'क्यों अमरजी, बोलो क्या पियोगे ? इंडियन व्हिस्की ? जमीकन रिम ? पिल्ज़ बियर या सिर्फ़ शरबत-ए-दीदार ?'

अमर ज़रा भी तैश में नहीं आया। उसने सिर्फ़ इतना कहा, 'अरे भई जो चाहे कह लो—मगर मैं गोपाल से मिलने आया हूँ। मालूम है वह कहाँ है इस वक़्त ?'

'वह क्या बैठा पी रहा है—अरे गोपाल ये तेरा सूफ़ी यार तेरे रंग को भंग करने आया है—अभी बड़े ज़ोर का भाषण देगा…'

गोपाल अमर को बड़े तन्ज़ से मुबारकबाद दे रहा था। वह पिछली रात वाली बात नहीं भूला था जब आधी रात को इन्दू अमर से मिलने उसके कमरे में आयी थी।

'आओ, अमर भैया आओ ! अब तो तुम भी हम पापियों की टोली में शामिल होते जा रहे हो न ? बोलो आज क्या पियोगे ?'

'अरे भई कुछ नहीं।' अमर ने इन्कार किया, 'मैं तो तुमसे कुछ बात करने आया हूँ।'

'तो बोलो, बात क्या है ?'

'पहले ये बताओ डौक्स के आस-पास कभी गोलमाल होते हुए देखा है ?'

'गोलमाल ?' गोपाल ने अमर के सवाल को दोहराया, 'सच पूछो तो मैंने तो बस एक बार तुम्हारी दोस्त इन्दू को अनाज चुराते हुए देखा था —वही छोकरी जो आधी रात के बाद तुमसे अकेले मिलने आयी थी !'

'मैं इन्दू की नहीं, सेठ और उसके आदमियों की बात कर रहा हूँ।'

'और मैं सेठ और उसके आदमियों की बात नहीं कर रहा हूँ, समझे।' फिर उसके लहज़े में कुछ नर्मी आयी और वह अमर से बहस करने लगा, 'ऐसी बातें ख़तरनाक होती हैं अमर भैया ! मेरी मानो, तुम भी इस

गोलमाल में न पड़ो—सेठ क्या करता है, क्या नहीं करता—हमें इससे क्या वास्ता ? गोरमेंट जाने सेठ जाने। हम तो इतना जानते हैं सेठ हमें अच्छी पगार देता है। मीठे बोल बात करता है। आज रात मुझे अपनी पार्टी पर बुलाया है, और मुझे क्या चाहिए—लो शराब पियो !'

'ठीक कहते हो दोस्त, तुम्हें और कुछ नहीं चाहिए।' फिर अमर उठ खड़ा हुआ, 'मगर मुझे चाहिए—सच—असलियत ! मैं जब तक उसको ढूँढ नहीं लूँगा मैं चैन से नहीं बैठ सकता···'

और अमर कमरे से बाहर चला गया।

उसी वक़्त जग्गा, जो रंजीत का आदमी था आया और गोपाल के क़रीब बैठ गया और हुक्म दिया—

'अरे छोकरे एक बोतल लाओ—हमारे दोस्त के लिए···'

'दोस्त !' गोपाल ने दोहराया, उधर देखते हुए जिधर अमर गया था, 'वह साला मुझे दोस्त कहता है। मैं भी उसे दोस्त समझता हूँ, मगर इसका मतलब ये तो नहीं कि वह आग में हाथ डाले तो मैं भी आग में हाथ डालूँ !'

'बिलकुल नहीं ! मगर वह कहता क्या है ?'

'साला अपने-आप को धर्मात्मा समझता है। ख़ुदाई ख़िदमतगार ! साला सेठ साहब के काम में टाँग अड़ाना चाहता है।'

जग्गा ने कुछ ऐसा मुँह बनाया जैसे वह अमर के इरादे के बारे में जानने के लिए बेकरार हो।

'साला कहता है, उधर कुछ गोलमाल चल रहा है। मैंने लाख समझाया, साले ऐसी बातें ख़राब होती हैं, मगर वह मानता ही नहीं। मुझे डर है कि ऐसी बातें और किसी से करेगा तो साला किसी मुसीबत में न पड़ जाये—मेरा दोस्त है न !'

'तुम फ़िक्र न करो। अमर तुम्हारा दोस्त है तो हमारा भी दोस्त है—हम उसे समझा देंगे···'

जग्गा की आँखों में एक ख़तरनाक चमक पैदा हो गयी थी।

'समझाया तो मैंने भी था मगर वह बड़ा ज़िद्दी है।'

'तुम फ़िक्र न करो। जग्गा के समझाने के सामने कोई ज़िद नहीं

ठहरती। मेरे समझाने का अलग ही ढंग है। तुम बिलकुल चिन्ता न करो। हम तुम्हारे दोस्त की देखभाल करेगा—तुम शराब पियो।'

जग्गा उठ खड़ा हुआ और अपने दूसरे साथी के पास गया।

इसी दौरान रोज़ी एक लिपटा हुआ पारसल लिए गोपाल के पास आयी और उससे कानाफूसी करने लगी।

'ये लो गोपाल ! मगर इन कपड़ों को हिफ़ाज़त से कल वापस कर देना—नहीं तो टोनी को पता चल गया तो वह चिल्लायेगा···'

'तुम फ़िक्र न करो, रोज़ी।' गोपाल ने उसको यक़ीन दिलाया। फिर अपना गिलास ऊपर उठाया रोज़ी का जाम-ए-सेहत पीने के लिए, 'तुम बड़ी अच्छी लड़की हो···ये तुम्हारी सेहत का जाम !'

उसने गिलास ख़ाली कर दिया।

१०

इन्तक़ाम की आग

बावू भाई के घर पार्टी हो रही थी। मालती के बाप की मूर्ति को फूलों के हार पहनाये जा रहे थे।

'मालती बेटी, अपने पिता की मूर्ति को नमस्कार करो—-आज के दिन ही उन्होंने अपनी कम्पनी की वुनियाद रखी थी।'

मालती अपने हाथों को जोड़ती है, 'पिताजी, मुझे अपने नक्शेक़दम पर चलने की शक्ति दो।'

'ऐसा मत कहो बेटी।' बाबू भाई के चेहरे पर बदनीयत के आसार उभर आये थे, 'जिस तरह हमने अपने भाई को खो दिया उस तरह हम तुम्हें नहीं खोना चाहते!'

मालती को अपने चाचा वावू भाई की इस बात पर बड़ा ताज्जुब हो रहा था। उसी वक़्त गोपाल अन्दर आया तो उसकी तवज्जा गोपाल की तरफ़ हो गयी। वह उस वक़्त काला सूट पहने हुए था इसलिए सब नौजवान लड़के और लड़कियों ने उसे घूरकर देखा।

'मालती', उसके चाचा ने कहा, 'जाओ बेटी अपने मेहमानों को रिसीव करो!'

जिस वक़्त गोपाल की आँखें मालती को ढूँढ रही थीं, नौजवान मर्दों और औरतों के एक ग्रुप ने आकर उसे घेर लिया।

'हैलो जी!' एक लड़की ने कहा।

'हैलो मिस्टर', एक नौजवान बोला, 'मेरा नाम जौली है। आपका क्या नाम है?'

'गोपाल।'

'भई गोपाल, ये सूट तो बड़ा बढ़िया सिलवाया है तुमने। तुम्हारा टेलर कौन है ? लाफन्स ? रामकिन्स ? एस्क्वायर ?'

'जी !' बौखलाये हुए गोपाल ने जवाब दिया जो उनमें से एक का भी नाम नहीं जानता था।

एक और नौजवान भी गुफ़्तगू में शामिल हो गया, 'अरे भई हम तो देखते ही समझ गये थे कि ये सूट इन्होंने लन्दन में सिलवाया है। वहाँ ये स्टाइल अठारहवीं सदी में बहुत मक़बूल था।'

'नहीं जी आप क्या बात करते हैं। ये तो लेटेस्ट फ़ैशन है। अभी कल ही की बात है, मैंने एक बैंड मास्टर को बिलकुल ऐसा ही सूट पहने देखा था। फिर ये पुराना स्टाइल कैसे हो सकता है ?'

अब गोपाल समझ गया था कि वे नौजवान मर्द और औरतें जो अच्छे-अच्छे कपड़े पहने थे, दरअसल उसके कपड़ों का मज़ाक़ उड़ा रहे थे।

वह कुछ कहने ही वाला था कि मालती वहाँ आ गयी और ग्रुप में शामिल हो गयी और दोस्ताना तरीक़े से गोपाल को मुबारकबाद देने लगी।

'हैलो गोपाल !'

'हैलो मिस मालती !'

'अरे भई मालती, तुम्हारे ये दोस्त तो बड़े फ़ार्मल हैं।'

रंजीत बीच में बोल पड़ा, 'ये मालती देवी का दोस्त नहीं है—नौकर है—डौक्स में काम करता है।'

'काम करता हूँ', गोपाल ने जलकर कहा, 'हराम का नहीं खाता हूँ।'

'अरे भई', मालती ने सूरत-ए-हाल को सँभालते हुए कहा, 'गोपाल को मैंने आज की पार्टी में अपने दोस्त की हैसियत से बुलाया है—आप लोग क्यों उनके पीछे पड़ गये ?'

'हम तो इनके कपड़ों की तारीफ़ कर रहे थे।' नौजवानों में से एक ने समझाया।

'तो आप जानना चाहते हैं', गोपाल ने पूछा, 'कि मैंने ये सूट कहाँ सिलवाया है ?—बात ये है मैंने ये सिलवाया नहीं, किराये पर लिया है—

सिर्फ़ एक रात के लिए। कहिये तो किराया भी बता दूँ ?'

मालती एकदम बीच में बोल पड़ी, 'ये गोपाल हैं न मेरे दोस्त, बड़े मज़ाक़िया हैं। तुम लोगों को बना रहे हैं।'

हँसी का एक क़हक़हा फट पड़ा। फिर मालती गोपाल को एक तरफ़ ले गयी और कहा, 'आओ गोपाल मेरे साथ—कहो क्या पियोगे ?'

बैरा काकटेल के गिलास लिए उनके पास पहुँचा।

'कैम्पा कोला', गोपाल बोला।

मालती हँस पड़ी, 'मैंने तो सुना है तुम व्हिस्की की बोतल की बोतल पी जाते हो—और आज सिर्फ़ कैम्पा कोला ?'

'मिस साहब', कैम्पा कोला का एक गिलास लेते हुए गोपाल बोला, 'एक मज़दूर व्हिस्की कहाँ पी सकता है ? मैं तो देसी ठर्रा पीता हूँ—मगर आज सिर्फ़ कैम्पा कोला।'

'तो फिर', मालती ने कहा, 'मैं भी आज यही पिऊँगी।'

उसने भी एक गिलास लिया और फिर गोपाल की तरफ़ पलटी।

'सुना है तुम्हारी दोस्ती एक कैबरे डांसर रोज़ी से थी।'

'थी नहीं—है। अब मेरी दोस्ती एक मामूली डांसर से नहीं तो क्या एक करोड़पती की कॉलिज में पढ़ने वाली भतीजी से होगी ?'

'दोस्ती का क्या भरोसा ?' मालती उसकी आँखों में आँखें डालकर बोली, 'किसी से भी हो सकती है ?'

वह और कुछ कहना चाहती थी, या वह कुछ कहना चाहता था लेकिन इतने में सेठ बाबू भाई उनके बीच में आया।

'नमस्ते सेठजी !' गोपाल ने नमस्कार किया।

'हैलो गोपाल ! भई बहुत अच्छा हुआ तुम आ गये। खाना खाये बग़ैर न जाना…।' फिर दूसरे लोगों से मुखातिब होकर उसने ऐलान किया, 'भई सुना है ये गोपाल बहुत अच्छा गाता है। इससे गाना ज़रूर सुनना !'

इस पर ज़ोर-शोर से तालियाँ बजने लगीं। उसी वक़्त एक नौकर आया और सेठ बाबू भाई से कानाफूसी करने लगा। बाबू भाई ने अपनी उँगली से बाहर कमरे की तरफ़ इशारा किया—अपने मेहमानों पर एक नज़र डाली और उनका जायज़ा लिया और फिर मालती से बोला, 'बेटी

तुम मेहमानों की ख़ातिर-तवाज़े करो—मैं अभी आता हूँ!'

फिर वह दूसरे कमरे में चला गया।

अपने ऑफ़िस रूम में वह बैठा ही था कि नौकर अमर को लेकर आ गया।

'अरे भई अमर—आओ···आओ···बैठो···'

'मैं खड़ा ही ठीक हूँ सेठजी—माफ़ कीजियेगा इस वक़्त आपको तकलीफ़ दी—मगर दो दिन से आपसे मिलने की कोशिश कर रहा हूँ। रंजीत साहब मिलने ही नहीं देते···।'

'अरे भई, माफ़ करना', सेठजी ने बड़ी डिप्लोमेसी से कहा, 'मैं इस फंक्शन के इन्तज़ाम में इतना मसरूफ़ था कि क्या बताऊँ—ख़ैर अब बोलो, क्या कहना है?'

'कहना नहीं सेठ साहब, आपको कुछ दिखाना है।'

तब उसने सोने के दो बिस्कुट अपनी जेब से निकाले और सेठ के आगे मायने के लिए पेश किये।

सेठ ने एक्टिंग करते हुए ताज्जुब से देखा, अपनी घबराहट पर क़ाबू पाते हुए और अपने चेहरे पर मासूम-सी मुस्कराहट लाते हुए कहा, 'अरे भई ये क्या है?'

'आप ही बताइये ना!' अमर तल्ख़ लहजे में बोला।

'लगता तो सोना है, मगर आया कहाँ से? क्या स्मगलिंग का धन्धा शुरू कर दिया?'

'स्मगलिंग का धन्धा तो है सेठजी। अब ये मैंने शुरू किया है या किसी और ने—ये आप बताइये।'

'मुझे क्या मालूम?' वह फ़ौरन बोला और फिर सवाल किया, 'ये तुम्हें मिले कहाँ से?'

'एक अनाज चोर ने आपकी ट्रक में लदी बोरियों में एक छुरी मारी तो उसमें से अनाज के साथ ये सोने के बिस्कुट गिर पड़े···।'

'तब तो ये स्मगलिंग का माल है···कोई हमारे ट्रकों को इस ग़ैर-क़ानूनी काम के लिए इस्तेमाल कर रहा है···तुम मेरी जगह होते तो क्या करते?'

'पुलिस को रिपोर्ट करता', अमर सेठ की तरफ़ देखकर बोला, जैसे कहना चाहता हो, 'लेकिन तुम नहीं करोगे।'

सेठ ने फ़ोन उठाया—एक नम्बर मिलाया—बोला, 'एण्टी-करप्शन ब्रांच ?'

दूसरे कमरे में रंजीत ने फ़ोन उठाया—जवाब दिया, 'हाँ।'

'मैं बाबू भाई बोलता हूँ—देखिये हमारे एक आदमी अमर कुमार को सोने की स्मगलिंग का कुछ पता चला है—जी हाँ—माल भी हाथ आया है—उसे हम आपके पास भेज रहे हैं—वह आपको सब-कुछ बता देगा··· पूरी तहकीक़ात कीजिये···क्योंकि ये माल हमारी ट्रक से निकला है तो उसमें हमारी बड़ी बदनामी होती है···थैंक्यू···इन्सपैक्टर साहब—हाँ एक बात और—अमर हमारा ख़ास आदमी है···बड़ा ईमानदार और आदर्शवादी है···उसकी जल्दी छुट्टी कर दीजियेगा···।'

दूसरी तरफ़ रंजीत दाँत भींचकर कहता है, 'वो तो हम कर ही देंगे।'

'जाओ भाई—सीधे वहीं जाओ—और ये गोल्ड बिस्कुट वहीं ले जाओ···मैं भी तुम्हारे साथ चलता मगर घर में ये पार्टी हो रही है···।'

पार्टी में तालियों का शोर बुलन्द होता है जब मालती ये ऐलान करती है, 'अब मैं गोपाल से दरख़्वास्त करूँगी कि वह एक गाना हमें सुनायें···।'

गाने का ख़याल ये हो कि गोपाल उन लोगों से बदला लेने की कोशिश कर रहा है जिन्होंने उसका मज़ाक़ उड़ाया—वह यह महसूस करता है कि वे लोग उसे अपने से हीन समझ रहे हैं और उन लोगों में मालती भी शामिल है—उसकी चोट आम तौर पर अमीरों पर होती है और ख़ासकर अमीर लड़की मालती पर। अब वह नशे में है और इसलिए अब उसे कोई रोक नहीं है। वह साफ़-साफ़ और बेढंगे तरीक़े से बात करता है।

म्यूज़िक के टुकड़ों पर—

अमर पुलिस स्टेशन की तरफ़ जा रहा है—पहले बस में, फिर पैदल—एक भारी ट्रक उसके पीछे आ रहा है।

जब अमर पुलिस स्टेशन के सामने पहुँचता है, वह दोनों सोने के बिस्कुट अपनी जेब से निकालता है। ठीक उसी वक़्त भारी ट्रक तेज़ी से

आकर उससे टकराता है और रात के अँधेरे में ग़ायब हो जाता है—पुलिस ऑफ़ीसर्स और पुलिस कान्सटेबिल दौड़े हुए बाहर आते हैं।

वे देखते हैं कि एक आदमी सड़क पर पाँव पसारे पड़ा है और ख़ून में लथपथ है। जब वे उसके क़रीब आते हैं तो देखते हैं कि वह मर चुका है और उसके हाथ में दो सोने के बिस्कुट हैं।

पार्टी में गोपाल का गाना ख़त्म होने पर सब तालियाँ बजाते हैं—उनमें मालती भी शामिल थी जिसने संजीदगी की हद तक गाने को पसन्द किया था—दूसरे तारीफ़ कर रहे थे लेकिन ज़रा तीखे अन्दाज़ में।

'अरे वाह, ये गोपाल तो तानसेन के ख़ानदान से मालूम होता है...।'

'अजी तानसेन क्या चीज़ है अपने गोपाल के सामने !'

इतने में ड्राइंग रूम में टेलीफ़ोन की घण्टी बजने लगी।

रंजीत ने टेलीफ़ोन उठाया—सुना—सेठ बाबू भाई को दिया, ये कहते हुए, 'सेठ साहब बड़ी बुरी ख़बर है !'

सेठ ने फ़ोन लिया। सबके सब ख़ामोश हैं और सेठ की तरफ़ देख रहे हैं—सेठ सुनता है—सिर्फ़ ये कहते हुए—'हाँ हाँ...कौन ? अमर कुमार...हाँ वह हमारे यहाँ काम करता है—क्या कहा ? क्या हुआ ? ओह माई गॉड ! बेचारा—फिर कहिये—उसके पास स्मगलिंग किया हुआ सोना निकला है ? नहीं साहब, ये कैसे हो सकता है—मैं अभी आता हूँ !'

उसने फ़ोन रख दिया। हर एक जानने के लिए बेकरार था कि क्या हुआ है।

'सेठ साहब, अमर भैया को क्या हुआ ?' गोपाल ने सेठजी से बेकरारी के आलम में पूछा।

सेठ ने अपने चेहरे को ग़मगीन बना लिया, 'भई तुम्हारे अमर भैया को किसी ज़ालिम ट्रक ड्राइवर ने कुचल के रख दिया।'

'अमर भैया बेचारे ! क्या वह मर गये ?' मालती ने झिझकते हुए पूछा।

सेठ ने ग़मगीन होकर सर हिला दिया और फिर बोला, 'इससे भी बुरी ख़बर तो ये है कि मरते वक़्त उसके पास स्मगलिंग किया हुआ सोना

निकला है।'

गोपाल उठकर खड़ा हुआ और ग़ुस्से में बोला, 'ये कभी नहीं हो सकता!'

बाबू भाई भी उठ खड़ा हुआ—गोपाल के बिलकुल सामने। उसने गोपाल की आँखों में घूरकर देखा। फिर सोच-समझकर ख़ामोशी से बोला, 'तुम बच्चे हो—हम जानते हैं इस दुनिया में क्या हो सकता है—और क्या नहीं हो सकता?'

फिर उसने बिना इरादा मालती की तरफ़ देखा। उसके देखने से वहशत ज़ाहिर होती थी। मालती डर गयी। क्यों और किसलिए, ये उसे मालूम नहीं था।

ड्रम को पीटा जा रहा था—

ये कैबरे बार का बैंड था—

रोज़ी मगन होकर नाच रही थी। वह तेज़ रफ़्तार से घूम रही थी।

गोपाल के सामने कई ख़ाली बोतलें पड़ी थीं।

आज वह बेतहाशा पिये जा रहा था।

नाच के बाद रोज़ी उसके पास आयी, 'गोपाल, तुम्हें क्या हो गया है? जब से अमर भैया की चिता को जलाकर आये हो इतनी बोतलें ख़ाली कर चुके हो—क्या तुम्हारा भी जान देने का इरादा है?'

गोपाल ने आहिस्ता से उसकी तरफ़ देखा और कुछ सोचकर बोला, 'जान देने का इरादा है या जान लेने का इरादा है!'

'तो मेरी जान ले लो—मेरी जान', उसने जज़बात में डूबकर कहा।

'तुम्हारी जान क्यों? उनकी जान लूँगा जिन्होंने अमर भैया की जान ली है—जान ही नहीं, उनका नाम, उनकी इज़्ज़त ली है—एक धर्मात्मा आदमी को मरने के बाद स्मगलर बना दिया है!'

'तुम्हें इससे क्या? तुम अपने काम से काम रखो।'

'नहीं रोज़ी, मेरा काम तो अब शुरू हुआ है—अब तक तो मैं एक

सुनहरा सपना देख रहा था। अमर भैया की मौत ने मुझे झिझोड़कर रख दिया है। मुझे अमर भैया का काम पूरा करना है।'

और ये कहकर वह उठ खड़ा हुआ।

'तुम्हारे सामने क़सम खाता हूँ रोज़ी कि जब तक मैं अमर भैया के क़ातिलों का पता न चला लूँगा, शराब की एक बूँद भी नहीं पीऊँगा।'

ये कहकर उसने आधी ख़ाली बोतल को उठाया और उसे मेज़ पर चकनाचूर कर दिया।

गिलास के टूटे हुए हर टुकड़े में उसके चेहरे का अक्स नज़र आ रहा था जिस पर इन्तक़ाम की आग दहकती दिखायी दे रही थी।

११

बुख़ार नहीं उतरा

इन्दू अपने झोंपड़े के क़रीब खड़ी थी जब गोपाल उसके पास पहुँचा।

'इन्दू !' वह नरमी से बोला।

'जी', उसने जवाब दिया।

'तुम्हारे बाबा कहाँ हैं ?'

'दारूखाने में—अमर भैया की मौत ने तो उन्हें पागल बना दिया है। हर वक़्त यही बड़बड़ाते रहते हैं—भागो यहाँ से भागो—मौत का चक्कर फिर से चल पड़ा है।'

'फिर से चल पड़ा है !' गोपाल ने ये शब्द दोहराये, 'इसका क्या मतलब है ?'

'शराबी की बात का भी कोई मतलब होता है ?' और वह गोपाल की तरफ़ देखने लगी।

'बुरा न मानो तो एक बात बताओगी ?'

'कहिये।'

'उस रात को तुम अमर भैया से मिलने क्यों गयी थीं ?'

'न गयी होती तो अमर भैया भी न मरे होते।'

'क्या मतलब ?'

'उस रात ही मैंने उन्हें सोने के बिस्कुट दिये थे जो मरते वक़्त उनके हाथ में पाये गये।'

'तुमने दिये थे ! तुम्हें कहाँ से मिले थे ?'

'सेठ बाबू भाई की ट्रक पर लदी हुई अनाज की एक बोरी में से—

इसीलिए तो वह कल रात को सेठजी से मिलने गये थे ।'

'हूँ' अब बात गोपाल की समझ में आ रही थी, 'तो सेठ का असल बिज़निस स्मगलिंग है...'

परछाइयों में रंजीत का एक आदमी छुपा हुआ था, जो सेलर ब्वाय बार में भी मौजूद था, उनकी ये बातें सुन रहा था ।

रंजीत के आदमी ने जाकर उसे वह सब बातें बता दीं जो उसने सुनी थीं ।

रंजीत ने उससे पूछा, 'अबे तुझे यक़ीन है, ये वो दोनों ही थे जो ये बात कर रहे थे ?'

'मेरे बाप की क़सम सरकार !'

'तेरा कोई बाप भी था—ये तो आज ही मालूम हुआ !'

रंजीत ने इन सब बातों की खबर सेठ को दे दी ।

'फिर तो इन दोनों को भी अमर के पास जाना होगा !'

'हुक्म हो तो उसका भी इन्तज़ाम कर दूँ ।'

'नहीं, अभी नहीं...रोज़-रोज़ ऐसे भयानक एक्सिडेंट होने लगे तो पुलिस शुबः करने लगेगी ।'

'एक्सिडेंट और क़िस्म के भी हो सकते हैं साहब !'

अगले दिन—

मज़दूरों की बस्ती !

गोपाल काम के लिए जा रहा था ।

मालती अपने स्कूल की तरफ़ ।

दोनों मिले ।

'हैलो गोपाल !'

'नमस्ते मिस मालती ।'

'अमर भैया तुम्हारे बड़े दोस्त थे—उनकी मौत का बड़ा अफ़सोस है ।'

गोपाल खामोश रहा ।

'उस दिन से तुम मिले नहीं ? कहाँ रहे ?'

गोपाल अब भी ख़ामोश था।

'तुम्हें क्या हुआ गोपाल ?'

'अपनी ज़िन्दगी का टाइम-टेबिल बदल रहा हूँ, मिस साहब !'

'और हमारी दोस्ती ?'

'अब बेकार के सपने देखने छोड़ दिये हैं मैंने। अपना काम देखिये मिस साहब। मज़दूरों से बात करना आपके लिए ठीक नहीं।'

मालती को शशोपंज में छोड़कर वह चला गया। वह हैरान थी और बड़बड़ा रही थी—

'मज़दूर !'

'अरे भई ये काम तो मज़दूरों का है।' क्लर्क, जो अब अमर की जगह काम कर रहा था गोपाल से बोला।

गोपाल उस वक़्त एक भारी बोरी उठाकर ले जा रहा था।

'बाबूजी, मेरे लिए ये काम नया नहीं है—मैं पहले भी यही काम करता था।'

'मगर भई तुमने तो ये काम छोड़ दिया था ?' वह गोपाल के साथ भागते हुए पूछ रहा था जो बोझ से दबा होने पर भी तेज़-तेज़ चल रहा था।

'हाँ भई, कुछ दिन के लिए हरामखोरी की आदत पड़ गयी थी··· अब फिर ईमान की रोटी खाना चाहता हूँ।'

अचानक वह रुक गया। अभी तक वह बोझ के साथ झुका हुआ था।

उसके सामने सेठ बाबू भाई खड़ा था।

'ये क्या बचपना है गोपाल ? क्या दिमाग़ ख़राब हो गया है ?'

'ख़राब हो गया था—मगर अब ठिकाने पर आ गया है। आप फ़िक्र न करें। जो काम करूँगा, उसी की मज़दूरी लूँगा।'

'मगर तुम्हें मज़दूरी करने की क्या ज़रूरत है ? क्या साबित करना चाहते हो ?'

'कि मैं अपनी मेहनत और पसीने की कमाई खा रहा हूँ—हराम-खोरी की नहीं !'

'अच्छा भई, जो जी चाहे करो। मैं तो अफ़सोस करने आया था तुम्हारे दोस्त का। तुम तो जानते हो ऐसे एक्सिडेंट तो होते ही रहते हैं—अमर की जगह मैं भी हो सकता था !'

लेकिन गोपाल वहाँ से जा चुका था।

फिर बाबू भाई बोला, 'और तुम भी हो सकते हो !'

और जिस अन्दाज़ में उसने 'हो' कहा उसमें सख़्त धमकी थी।

वह रात—

सेलर ब्वाय बार और कैबरे—

गोपाल कन्धे पर अपना जैकिट डाले दाखिल हुआ।

उसने रंजीत के आदमी मंगता और भीखू को एक मेज़ पर बैठे हुए देखा और सीधा उनकी तरफ़ गया।

उसको बड़ा ताज्जुब हुआ जब उन दोनों ने बड़ी गर्मजोशी से उसे ख़ुश-आमदीद कहा और अपने साथ पीने के लिए मजबूर किया।

'आओ गोपाल', मंगता ने कहा, 'सुबह से शाम तक साले सेठ के लिए जान देते हैं—अपना ख़ून-पसीना बहाते हैं—दारू पीकर ही अपना ग़म दूर कर लें !'

उन्होंने गोपाल को गिलास लेने के लिए मजबूर किया और अपने लिए अलग-अलग गिलास लिए। गोपाल ने शराबी का पोज़ बना लिया लेकिन गिलास को अपने होठों से लगाकर चुपके से शराब को मेज़ के नीचे फेंक दिया।

बार-बार उन लोगों ने उसका गिलास भरा और हर बार गोपाल ने शराब को इसी तरह फेंक दिया—एक पिये हुए शराबी का रूप धारकर।

जब वे समझे कि गोपाल पूरी तरह पी चुका है और उसका बरताव काफ़ी पिये हुए शराबी जैसा है तो उन्होंने उसको लड़ाई के लिए भड़काया।

गोपाल ने उनका गेम खेला। उनमें से एक को उसने पुकारा, 'अबे

ओ बाबू सेठ के चमचे…'

'तू मुझे चमचा कहता है ?' मंगता चिल्लाया। खड़े होकर उसने दूसरी मेज़ पर अपने साथियों से मुखातिब होकर कहा, 'यारो ये साला मुझे चमचा कहता है !'

उन सबने खड़े होकर गोपाल को घेर लिया और उसको मारना शुरू कर दिया। पहले गोपाल नशे में धुत शराबी का रूप धारकर ज़मीन पर गिर गया। फिर मार खाने के लिए लड़खड़ाते हुए उठा।

फिर उनको ताज्जुब हुआ और उन पर दहशत हावी हो गयी क्योंकि उस 'पिटे हुए आदमी' ने एक छलाँग लगायी और उनको एक के बाद एक घूँसे मारने लगा।

अब एक बाक़ायदा लड़ाई शुरू हो गयी।

और आख़िरकार गुण्डे ये कहते हुए पीछे हटे, 'अरे इस गोपाल पर तो शराब का कोई असर ही नहीं हुआ !'

जब वे चले गये तो गोपाल को पता चला कि उसके भी कुछ ज़ख़्म लगे हैं। जो लोग उसकी तरफ़ दौड़े उनमें रोज़ी भी थी जो उसे अपने केबिन में ले गयी।

'गोपाल, तुम तो कह रहे थे अब मैं कभी नहीं पीऊँगा—आज क्या हुआ जो लड़ाई-झगड़ा मोल ले बैठे ?'

'रोज़ी, मैंने तो एक बूँद भी नहीं पी—ये लड़ाई-झगड़ा नहीं था—ये लोग मुझे इस बहाने मार डालना चाहते थे।'

'इस जगह आकर तुम सेठ बाबू भाई को गाली दे रहे थे, ये बात बड़ी ख़तरनाक हो सकती है।'

'क्यों ? सेठ बाबू भाई का इस जगह से क्या सम्बन्ध है ?'

'तुम भी कितने भोले हो ? चलो अन्दर, मेरे साथ आओ। तुम्हारी मरहमपट्टी करती हूँ और तुम्हें बताती भी हूँ।'

अपने कमरे के अन्दर रोज़ी गोपाल के ज़ख़्मों पर पट्टी बाँधते हुए बोली, 'क्या तुम नहीं जानते, सेठ बाबू भाई ही तो इस जगह का मालिक है—हर रात को यहाँ की सब आमदनी सेठ के आदमी आकर ले जाते हैं। इसीलिए तो उसके गुर्गे यहाँ रहते हैं।'

'बाबू भाई—और दारूखाने का मालिक ! अरे वाह ! तुमने तो बड़े पते की बात बतायी । थैंक्यू रोज़ी, थैंक्यू !'

'आहिस्ता बोलो—ये जगह बड़ी ख़तरनाक है और मेरी बात मानो तो सेठ से दुश्मनी लेने से पहले यहाँ से भाग चलो । मैं भी ये धन्धा छोड़ना चाहती हूँ ।'

फिर उसने कानाफूसी की, 'मुझे ऐसा लगता है यहाँ कोई ख़तरनाक काम हो रहा है । दूसरे देशों के सेलर आते रहते हैं और सेठ के आदमियों से खुसर-पुसर करते रहते हैं । इससे पहले कि हम भी किसी मुसीबत में फँस जायें···चलो यहाँ से भाग चलें ।'

'नहीं रोज़ी, मैं अब मैदान छोड़कर नहीं भाग सकता ।'

रोज़ी को हसद भरा शुबः हुआ, 'क्या अभी तक उस मालती का बुख़ार नहीं उतरा ? पागल मत बनो डार्लिंग, सेठ को मालूम हो गया तो तुम्हें मार डालेगा ।'

गोपाल के चेहरे पर सख़्त जज़बात उभर आये और उसने दाँत पीस-कर कहा, 'अगर इससे पहले मैंने सेठ को न मार डाला···।'

१२

सोने का पिंजरा

रात—अँधेरी और भयानक रात !

मालती अपने बैंडरूम में थी। अपने नर्म बिस्तर पर आँखें खोले लेटी थी। मगर वह सो नहीं सकी।

उसने अजीब-अजीब आवाज़ें सुनीं।

कौन हँस रहा था ये ग़ैर इन्सानी हँसी जैसे शैतान हँस रहे हों ?

वह डर गयी—लेकिन वह यह भी मालूम करना चाहती थी कि कौन हँस रहा है ?

वह अपने बिस्तर से उठी, ड्रेसिंग गाउन पहना और बाहर चली गयी।

लम्बे बरामद्रे में से गुज़रते हुए वह एक बन्द दरवाज़े पर आयी। दरवाज़ा स्टील का बना हुआ है। वह बैंक के सेफ़ डिपाज़िट लॉकर की तरह है लेकिन जब उसने चाबी के सुराख़ से भाँका तो उसे पता चला कि ये तो बिलकुल अलग तरह का बैंक है।

बन्द कमरे के अन्दर—

बाबू भाई बैठा है—उसका चाचा !

लेकिन उस वक़्त उसका रूप कुछ और ही था।

एक रहमदिल बूढ़े के बजाय आज वह एक चालाक और मक्कार आदमी दिखायी दे रहा था।

अब उसकी लालची आँखों में हवस थी। वह मेज़ पर पड़े सोने के ढेर को देख रहा था और हँस रहा था—एक पागल की तरह।

मालती उसे यूँ हँसते देखकर डर गयी।

वह समझी कि बूढ़ा पागल हो गया है ।

वह वहाँ से भाग जाना चाहती थी लेकिन उसने महसूस किया कि उसके कन्धों पर कोई हाथ रख रहा है ।

वह चीखी—और पलटकर देखा ।

रंजीत वहाँ खड़ा था ।

'डर गयीं ?' रंजीत ने कहा ।

'मुझे हाथ मत लगाओ', वह सिकुड़ गयी और उसका हाथ झटक दिया ।

'अब हाथ लगाने से क्या शरमाना मालती । बहुत जल्द हम दोनों एक हो जायेंगे—उसी का तो रिहर्सल कर रहा था ।'

उसकी आँखों में दहशत थी । वह बोली, 'क्या बकवास कर रहे हो ? किसने कहा तुमसे ?'

'तुम्हारे चाचा सेठ बाबू भाई के अलावा और कौन कह सकता है—मेरी वफ़ादारी का कुछ तो इनाम मिलना चाहिए । मैं उनके लिए सोने का प्रबन्ध करता हूँ । बदले में वो मुझे अपनी चाँदी जैसी भतीजी का हाथ देंगे । सौदा बिलकुल नक़द—इस हाथ दे, उस हाथ ले ।'

'मैं बिकाऊ नहीं हूँ । तुम भी सुन लो और अपने सेठ साहब से भी कह देना ।'

वह चली जा रही थी कि उसी वक़्त रंजीत ने उसे सख़्ती से पकड़ लिया और दरवाज़े की तरफ़ खींचते हुए कहा, 'कहाँ जाती हो मेरी जान, अपने काका से तो मिलती जाओ ।'

ये कहकर उसने एक ख़ुफ़िया घण्टी का बटन दबाया जो अन्दर की तरफ़ बजती थी ।

घण्टी की आवाज़ सुनकर सेठ फ़ौरन खड़ा हो गया और किसी चीज़ से सोने को ढक दिया । फिर उसने दरवाज़ा खोला ।

'ये क्या है रंजीत ?' उसने सवाल किया ।

'ये आपकी भतीजी है सेठ साहब ।' रंजीत ने मालती को घसीटते हुए जवाब दिया, 'आपकी ये भतीजी आपकी ही जासूसी कर रही थी ।'

'इसको छोड़ दो यहाँ और तुम जाओ—कल सुबह का तो सब काम

तैयार है ?'

'सब तैयार है। बस आपके हुक्म का इन्तज़ार रहेगा। मैं जाता हूँ, मगर अपने वादे का ख़याल है तो अपनी भतीजी से कह दीजिये मेरी तरफ़ ···नफ़रत से नहीं···प्यार से देखा करे। गुड नाइट सेठ साहब···।'

'गुड नाइट', सेठ ने कहा।

'गुड नाइट मालती', रंजीत ने कहा।

जब रंजीत चला गया तो मालती ने नफ़रत से उसकी तरफ़ थूका।

ज्यूँ ही दरवाज़ा बन्द हुआ मालती अपने चाचा की तरफ़ पलटी, 'तो मेरे स्वर्गवासी पिता की कम्पनी को आप स्मगलिंग के लिए इस्तेमाल कर रहे हैं ?'

'स्मगलिंग ! कैसी स्मगलिंग ? तुम क्या बात कर रही हो ?'

मालती ने ड्रामाई अन्दाज़ में सोने पर से ढका हुआ कपड़ा हटा दिया।

'मैं इसकी बात कर रही हूँ—जो सोना आपने स्मगलिंग करके इकट्ठा किया है। जब आप पकड़े जायेंगे तो कितनी बदनामी होगी हम लोगों की।'

अब बाबू भाई एक वहशी आँखों वाले जनूनी की तरह बात कर रहा था, 'अच्छा हुआ तुम्हें असलियत का पता चल गया—उम्र-भर जिस रुपये से तुमने परवरिश पायी, शिक्षा पायी, वो यही सोना है—वरना तुम्हारे बाप ने जो कम्पनी छोड़ी थी उसकी असल आमदनी से तुम इतने बड़े कॉलिज में थोड़ी पढ़ सकती थीं !'

'अच्छा होता, अगर मैं पढ़ी न होती—जाहिल अनपढ़ होती। कम-से-कम ईमानदारी की रोटी खाकर दुनिया में सर उठाकर तो चल सकती थी !'

'अनपढ़, जाहिल होतीं···' बूढ़े ने चोट कसते हुए कहा, 'और उस बेवक़ूफ़, अनपढ़, जाहिल गोपाल से शादी कर लेतीं···?'

'वरना उस रंजीत गुण्डे से कर लूँ जिसके पल्ले आप मुझे बाँधना चाहते हैं—उस गुण्डे से तो गोपाल लाख दर्जे अच्छा है। और अभी तो उसने मुझसे पूछा भी नहीं। कौन जाने मैं कल उसे ही हाँ कह दूँ ?'

सेठ ग़ुस्से में बोल देता है. 'तो फिर सुन ले—कल सवेरे उसका भी

काम तमाम हो जायेगा !'

ये सुनकर मालती को एक धक्का-सा लगा।

सेठ ने मालती का हाथ पकड़कर उसे बाहर घसीटा।

बाबू भाई कारीडोर में मालती को घसीटता हुआ ले गया और उसे उसके बिस्तर पर पटककर बाहर से दरवाज़ा बन्द कर दिया।

फिर चिल्लाया, 'चौकीदार !'

सफ़ेद यूनीफ़ॉर्म पहने हुए चौकीदार डरते हुए आया।

'जी सेठ साहब !'

'देखो मिस साहब की तबीयत ख़राब है', और फिर अपने सर की तरफ़ इशारा किया, ये बताने के लिए कि इस लड़की का दिमाग़ कुछ खराब हो गया है।

फिर चेतावनी देकर कहा, 'देखो ये कमरे से निकलने न पाये। अगर निकली तो मैं तुम्हें गोली मार दूँगा ! समझे !'

'जी, सेठ साहब', चौकीदार ने घबराकर कहा, 'समझ गया ! सलाम साहब !'

सेठ छत पर आया।

चारों तरफ़ देखा ताकि इतमिनान हो जाये कि कोई उसे देख तो नहीं रहा है।

टेलिस्कोप की तरफ़ जाकर उसका रुख समन्दर की तरफ़ किया।

उसमें से देखा तो एक धुँधला-धुँधला-सा जहाज़ का खाका नज़र आया जो अपनी लाइट से सिगनल दे रहा था, जिसकी रोशनी बार-बार जलती थी और बुझती थी।

लाल—

हरी—

लाल—

हरी—

उसके चेहरे पर गहरा इतमिनान ज़ाहिर होता था, लेकिन आँखें बता रही थीं कि वह एक पागल आदमी का इतमिनान है।

दूसरे दिन—

भारी पेटियों को वज़नी क्रेनों की मदद से एक जहाज़ पर से उतारा जा रहा था।

रंजीत के तकड़े और भयानक आदमी क्रेनों को चला रहे थे।

क्रेनों के शेड की ऊँचाई से डौक्स पर चलते-फिरते लोग नन्हीं-नन्हीं चींटियों की तरह नज़र आते थे।

उनमें से एक रंजीत था जो क्रेन आपरेटर्ज़ को तरह-तरह के सिगनल दे रहा था।

अच्छी तरह इतमिनान कर लेने के पश्चात रंजीत एक टेलीफ़ोन वूथ में गया—एक नम्बर घुमाया—और कहा, 'यहाँ सब ठीक-ठाक है साहब !'

दूसरी तरफ़ सेठ डाइनिंग टेबिल पर बैठा था और अपना नाश्ता खत्म कर रहा था और फ़ोन पर बात भी कर रहा था।

'तो मैं अभी आता हूँ !'

फिर वह मेज़ पर से उठा। नौकर को हुक्म दिया, 'देखो मिस साहब का नाश्ता एक ट्रे पर लगाकर उनके कमरे में दे दो—और याद रखो वो बाहर न निकलने पायें !'

तब वह बाहर चला गया।

जिस वक़्त नौकर नाश्ता लगा रहा था तो कार के स्टार्ट होने और जाने की आवाज़ आयी।

नौकर नाश्ते की ट्रे को मालती के कमरे तक लाया। फिर आहिस्ता से दरवाज़ा खटखटाया।

मालती की आवाज़ सुनायी दी, 'कौन है ?'

'मैं हूँ मिस साहब—मनमोहन—आपका नाश्ता लाया हूँ !'

'ठहरो—अभी न आना मैं कपड़े बदल रही हूँ···।'

नौकर मालकिन के कपड़े बदलने के ख़याल से मन-ही-मन मुस्कराने लगा।

फिर मालती की मीठी आवाज़ सुनायी दी, 'अब अन्दर आ जाओ मनमोहन।'

नौकर जो अभी तक मुस्करा रहा था, ट्रे के साथ अन्दर गया।

उसके सर पर एकदम मार पड़ी।

ट्रे उसके हाथ से गिर गयी।

वह ट्रे पर बेहोश हो गया।

और मालती झट से निकलकर, दरवाज़ा बाहर से बन्द करके भाग गयी।

१३

एक्सिडेंट-हादसा-दुर्घटना !

डौक्स—

भारी क्रेनें—

भारी क्रेनों को ऊपर चढ़ाया जा रहा था।

भारी क्रेनों को आहिस्ता से नीचे उतारा जा रहा था।

सेठ काम का मायना कर रहा था।

रंजीत एक तरफ़ खड़ा था।

क्रेन आपरेटर कड़ी निगरानी कर रहे थे।

कुछ कुली भारी बोझ उठाकर ले जा रहे थे।

वे क्रेनों के नीचे से गुज़र रहे थे।

उनके पीछे गोपाल भारी बोझ उठाये आ रहा था।

उसके पीछे इन्दू आ रही थी।

वह उससे कुछ कह रही थी—कुछ बहस कर रही थी।

सेठ उसको देख रहा था। और रंजीत सेठ की तरफ़।

इन्दू गोपाल से कह रही थी, 'गोपाल, तुम यहाँ काम करना छोड़ दो। मुझे तुम्हारी जान की तरफ़ से बड़ी चिन्ता है···'

'अरी तू अपनी फ़िक्र कर···'

सेठ का हाथ सिगनल के लिए उठा। फिर नीचे आया। फिर रंजीत का हाथ ऊपर की तरफ़ उठा।

मालती अपने चाचा की हरकतों को देख रही थी।

क्रेन आपरेटर ने पहिये को ढीला छोड़ दिया।

इन्दू ऊपर की तरफ़ देखने लगी—देखती है कि क्रेन की पेटी तेज़ी से नीचे की तरफ़ गिर रही थी।

एकदम उसने गोपाल को आगे की तरफ़ धक्का दे दिया।

गोपाल अपने वज़न के साथ गिर गया।

इससे पहले कि इन्दू अपने-आप को बचा सके—वज़नी पेटी उस पर गिर गयी—और उसे अपने नीचे कुचल दिया।

सब लोग उस तरफ़ दौड़ पड़े जहाँ यह दुर्घटना हुई थी।

जब सेठ आगे बढ़ा तो उसने मालती को देखा। वह ग़ुस्से में भरा उसके पास गया।

वह ग़ुस्से में बरस पड़ा, 'तुम यहाँ क्या कर रही हो···?'

जब स्ट्रेचर लाने वाले—डॉक्टर, कुली, डौक्स मज़दूर सब दुर्घटना की जगह दौड़े हुए गये, सेठ और मालती अकेले कोने में खड़े थे।

मालती का चेहरा ज़र्द हो गया था। उसके गालों से ख़ून उड़ चुका था। उसकी आँखों में नफ़रत और ग़ुस्सा था और वह कुछ ऊँची कानाफूसी की आवाज़ में बोल रही थी, 'तो तुमने उसको मार डाला, तुमने उसको मार डाला, सेठ बाबू भाई!'

'क्या बक रही हो?' सेठ ने कहा और एक ज़ोर का थप्पड़ रसीद किया जिसने मालती को ख़ामोश कर दिया।

वह मालती को कार की तरफ़ खींचकर लाया। उसमें बैठाया और ख़ुद उसके पास बैठ गया और ड्राइवर से कहा, 'घर की तरफ़ गाड़ी को तेज़ चलाओ!···मिस साहब की तबीयत ख़राब हो गयी है—इतना भयानक एक्सिडेंट देखा है न···!'

गाड़ी चलने लगी।

स्ट्रेचर लाने वालों ने इन्दू के कुचले हुए जिस्म को लाल कम्बल से ढक दिया।

गोपाल की आँखें आँसुओं से भरी थीं। वह पहले तो डबडबाई आँखों से मरी हुई इन्दू को देखता रहा, फिर उसने ऊपर क्रेन की तरफ़ देखा—और फिर जैसे उसकी आँखों में बदले की आग के शोले भड़कने लगे।

आग—

चिता के शोले—

इन्दू की चिता !

और सिर्फ़ दो आदमी उस जलती हुई चिता को देख रहे थे।—गोपाल और सखाराम—इन्दू का बाप, जो हमेशा की तरह नशे में था।

वह अपने-आप से कुछ बड़बड़ाकर कह रहा था।

जब चिता के शोले ठंडे पड़ गये, गोपाल सखाराम के पास गया।

'चलो काका !'

'कहाँ ?' मदहोशी की आवाज़ में बूढ़े ने जवाब दिया, 'अपनी इन्दू के पास—या उसके अमर भैया के पास ?'

फिर उसकी यादों में एक ख़याल जाग उठा—एक रोशनी आँखों में टिमटिमाने लगी—'या उनसे भी परे—तुम्हारे बाप नन्दू पहलवान के पास—या मालती के पिता मन्नू भाई के पास ?'

'क्या कह रहे हो काका ? मेरे बाप का मालती के पिता से क्या सम्बन्ध ?'

'क्या सम्बन्ध ? दोस्ती का सम्बन्ध—मालिक और मज़दूर की दोस्ती कैसे हो सकती है ? लोग तब भी कहते थे—ये हो ही नहीं सकता—मगर ऐसा था। तुम्हारा बाप मज़दूरों का बड़ा था, उनका सरपरस्त था। मन्नू भाई की छोटी-सी कम्पनी थी। कोई बड़ा कारोबार नहीं था, मगर उन दोनों की बड़ी दोस्ती थी। मन्नू भाई जो कभी ख़ुद मज़दूर था, मज़दूरों से अच्छी तरह पेश आता था। उसने तुम्हारे बाप से मिलकर मज़दूरों को कम्पनी में साझेदार बनाने की एक योजना बनायी थी—लोग कहते थे मालिक और मज़दूर भी एक हो सकते हैं—यक़ीन न हो तो मन्नू भाई और नन्दू पहलवान को देख लो—और फिर उन दोनों दोस्तों का अन्त भी एक साथ हुआ।'

'क्या हुआ ?' इस कहानी से मुतासिर होकर गोपाल ने पूछा।

'एक दिन दोनों दोस्त जा रहे थे। मैं पीछे-पीछे बातें करता हुआ जा रहा था कि वही हुआ जो आज हुआ—एक बड़ी लोहे की पेटी उन पर आ गिरी। मेरी टाँग गयी—उनकी जान गयी…'

'और ये भी जान-बूझकर किया गया···'

'बाबू भाई ने—अपने बड़े भाई और उसके दोस्त की जान ली, और मालिक बन बैठा—कम्पनी को अपने ढंग से चलाने लगा। भाई की बिन माँ की बेटी को बोर्डिंग में भर्ती करा दिया। मेरा मुँह बन्द करने के लिए पचास रुपये महीना की पैंशन मुकर्रर कर दी। तू उस वक़्त दो बरस का था।'

'बस काका बस।' गोपाल ने सख़्ती से कहा। उसकी आँखों में अंगारे दहक रहे थे। ग़ुस्से में उसका मुँह सुर्ख़ हो गया था। उसने क्रोध में कहा, 'अब मुझे अपना कर्तव्य मालूम हो गया है।'

उसी रात—

गोपाल के हाथ में एक ख़ंजर।

वह बाबू भाई के बंगले की दीवार पर चढ़ रहा था।

घर में दाख़िल हो रहा था।

खिड़की में से जलती हुई रोशनी देखी।

एहतियात से उसने खिड़की के ऊपर रोशनदानों में से झाँका। देखकर उसे धक्का-सा लगा।

बैडरूम में—

मालती बिस्तर पर पड़ी हुई थी। उसके मुँह को कपड़े से बन्द कर दिया गया था।

अभी तक वह छूटने की कशमकश कर रही थी। बाबू भाई उसके पास खड़ा था और एक डॉक्टर उसके हाथ में इंजेक्शन लगा रहा था।

गोपाल चीख़कर शोर मचाना चाहता था लेकिन फिर अपने दिल को मज़बूत करके अपने-आप को रोक देता है।

इंजेक्शन देने के बाद बाबू भाई और डॉक्टर महसूस करते हैं कि मालती का जिस्म ठण्डा हो गया है। इंजेक्शन के ज़रिये उसको नशीली दवा दे दी गयी है। अब वे उसके मुँह पर बँधी हुई पट्टी खोल देते हैं। वह आज़ाद है कहीं भी जाने के लिए। कुछ भी करने के लिए—लेकिन वह

कुछ भी नहीं करती है—कुछ भी नहीं कर सकती है—

लेकिन बाबू भाई दवाई के असर का इम्तिहान लेना चाहता है।

उसने मालती से पूछा, 'अब भागने की कोशिश तो नहीं करोगी ?'

उसने चाबी के एक खिलौने की तरह अपना सर हिलाया।

'आज जो तुमने देखा था—उस मज़दूर लड़की की मौत—वो एक एक्सिडेंट था—समझीं न—कहो एक्सिडेंट—हादसा—दुर्घटना !'

मदहोशी के आलम में मालती ने हलके से कहा, 'एक्सिडेंट—हादसा—दुर्घटना !'

'आज सवेरे क्या हुआ था ?' बाबू भाई ने दोबारा उससे पूछा।

दोबारा फिर मालती ने मदहोशी के आलम में, बेजान-सी होकर, हलके से कहा, 'एक्सिडेंट—हादसा—दुर्घटना !'

डॉक्टर ने बाबू भाई से पूछा, 'अब तो आप सैटिसफ़ाई हो गये सेठ साहब ?'

'हाँ—मालूम होता है काम तो किया है इस इंजेक्शन ने !'

'तो मेरी फ़ीस मिल जानी चाहिए सेठ साहब !' डॉक्टर की इस दरख़्वास्त के पीछे एक धमकी छुपी हुई थी।

'फ़ीस !—हाँ भई वो भी मिल जायेगी आपको।'

अपनी जेब में हाथ डालकर सेठ ने कुछ नोट निकाले—'पचास रुपये—सौ रुपये ?'

डॉक्टर ने सख़्ती से कहा, 'आप मज़ाक़ कर रहे हैं सेठ साहब।' उसकी आँखों में एक ख़तरनाक चमक थी।

'अच्छा भई, अब यही हैं मेरे पास—ये लो और जाओ यहाँ से !'

उसके हाथ में नोटों का बंडल ठूँस दिया और उसे अपने पीछे का दरवाज़ा बन्द करके रास्ता दिखाया।

उनके जाने के बाद गोपाल अन्दर के कमरे में कूदा। दरवाज़ा और खिड़कियाँ बन्द कर दीं और मालती के पास गया।

'मालती ! मालती !!' उसने कानाफूसी की।

मालती ने न जवाब दिया, न उसको पहचाना।

'मालती जानती हो मैं कौन हूँ ? गोपाल !'

'मैं तुम्हें नहीं जानती।'

'मालती—जानती हो आज सवेरे क्या हुआ था ?'

'एक एक्सिडेंट—हादसा—दुर्घटना !'

'मालती होश में आओ—तुम्हारी जान खतरे में है—ये तुम्हें भी मार डालेगा—जैसे तुम्हारे पिताजी को मार डाला था—मेरे बाबा को मार डाला था...'

आखिरकार 'पिताजी' शब्द पर मालती के चेहरे पर रद्दे-अमल होता है।

'पिताजी को क्या हुआ ?' एक बच्ची की-सी आवाज़ मालती के होठों से निकली।

'तुम्हारे पिताजी को बाबू भाई ने मार डाला—साथ में मेरे बाबा को भी...'

मालती की खुली आँखें हैरत से खुली रह गयीं, जैसे वह कोई ख्वाब देख रही हो। एक मधुर-सा संगीत उसकी यादों से उभरने लगा। अब उसकी आँखें वो सब-कुछ देख रही थीं जब वह एक बच्ची थी—

एक छोटी बच्ची अपने बाप की गोद में थी। वह उसे चूमता है और उसको बच्चागाड़ी में रख देता है।

फिर वह अपने दोस्त का हाथ थाम लेता है।

हाथों में हाथ डाले वे भारी क्रेनों के नीचे टहल रहे हैं।

जवान बाबू भाई सिगनल देता है।

एक भारी पेटी उन दोनों पर गिरती है। वे दोनों कुचले जाते हैं।

लोग दौड़ते हैं।

लोगों की भाग-दौड़ में बच्चागाड़ी को धक्का लगता है और वह टकराकर नीचे गिर जाती है।

उसके नन्हे पहिये घूमने लगते हैं।

बेबी मालती रोने लगती है।

चिल्लाने लगती है।...

और अब बड़ी मालती रोने लगी—और ऐसा लगता था कि नशा-आवर दवा के ज़हर को उसके आँसू धो रहे हैं।

'थैंक्यू गोपाल !' आखिरकार उसने कहा, 'लेकिन ये सब तुम्हें कैसे मालूम हुआ ?'

'इन्दू के बाबा ने आज अपनी बेटी की जलती हुई चिता के सामने सब-कुछ कह डाला।'

'वह मेरे काका हैं। मगर सोने के लालच ने उनको पागल बना दिया है !'

बाहर क़दमों की चाप सुनायी देती है।

गोपाल उछलकर खिड़की में से कूद जाता है।

सेठ रंजीत के साथ लौटता है।

मालती फिर रूप धार लेती है जैसे दवाई का उस पर अब भी असर हो।

सेठ ने कहा, 'उस डॉक्टर ने कमाल का इंजेक्शन दिया है।'

दवा के असर का पता लगाने के लिए सेठ मालती से पूछता है, 'आज सवेरे क्या हुआ था ?'

मालती नशा-आवर दवा वाला नाटक दोहराती है, 'आज सवेरे जो हुआ वो एक एक्सिडेंट—एक हादसा—एक दुर्घटना !'

सेठ रंजीत से कहता है, 'रंजीत, तुम मालती को सहारा देकर कार में ले चलो। मैं अभी आता हूँ।'

रंजीत के चेहरे पर मुस्कराहट आ जाती है। वह मालती को सहारा देता है। अपना हाथ मालती की कमर में डालने लगता है।

गोपाल खिड़की में से ये सब-कुछ देख रहा है।

रंजीत मालती को उठाकर बाहर ले जाता है।

१४

समाप्त या आरम्भ

कार—

रंजीत स्टीयरिंग व्हील के पास बैठा था।

सोने की तीन बोरियाँ उसमें लादी जाती हैं।

मालती ढोंग रचाती है और हर चीज़ देखती है।

सेठ उसके पास बैठता है।

'चलो रंजीत', वह हुक्म देता है।

रंजीत गाड़ी को गियर में लेता है। तेज़ी से ड्राइव करता है। उसको नहीं मालूम कि कार के पीछे जान को ख़तरे में डालकर गोपाल स्टेपनी को पकड़े हुए है।

आधी रात को बम्बई की सड़कें चमक रही हैं।

'गुड बाय बम्बई—गुड बाय इण्डिया', सेठ ने कहा।

'क्या आप हमेशा के लिए जा रहे हैं ?'

'हाँ रंजीत—अब इस मुल्क में शरीफ़ आदमी का रहना मुश्किल हो गया है।'

'मगर सामान तो आपने साथ कुछ लिया नहीं ?'

'जिसके पास सोना है—उसको सामान हर जगह मिल सकता है !'

'और मेरा क्या होगा सेठ साहब ? मालती को आप लिए जा रहे हैं ?'

'हाँ, मालती का अब यहाँ रहना खतरनाक है। न जाने, कब क्या बक दे ?'

अब कार एक वीरान साहिल पर पहुँचती है।

गोपाल अपने-आप को ऊँचे मिट्टी के टीलों में छुपा देता है।

एक छोटी-सी किश्ती उनका इन्तज़ार कर रही है।

सेठ मालती को किश्ती की तरफ़ ले जाता है। उसको किश्ती में बैठाता है।

'आओ रंजीत हाथ बटाओ', सेठ सोने से भरी तीन बोरियों की तरफ़ इशारा करके कहता है।

दोनों मिलकर एक बोरी किश्ती में ले जाते हैं।

फिर वो दूसरी बोरी चढ़ाते हैं—ये बहुत वज़नी है। रेत पर गिर जाती है। सोने के टुकड़े इधर-उधर बिखर जाते हैं।

जब वे तीसरी बोरी के लिए आते हैं। रंजीत उसे चढ़ाने से इन्कार करता है।

'इसको यहीं रहने दीजिये', उसके लहज़े में सख़्ती है, 'मुझे भी तो अपना हिस्सा चाहिए।'

पागलपन और हवस का लालच सेठ की आँखों से झलक रहा था।

'अगर तुम चाहो तो ले सकते हो', सेठ उससे कहता है और अचानक रिवाल्वर निकाल लेता है। उसकी तरफ़ निशाना ताकता है—'ले लो! ले लो!'

रंजीत बौखलाकर हँसने लगा, 'मैं तो मज़ाक़ कर रहा था, सेठ साहब।'

'तो उठाओ इसे...।'

'अकेला? आप भी तो हाथ लगाइये।'

'नहीं! अब तुम इसे अकेले ही उठाओगे—मेरे हाथ ख़ाली नहीं।' और उसे धमकाते हुए अपने हाथ में रिवाल्वर लहराया।

आख़िरकार रंजीत ने वज़नी बोझ उठाया। एक-दो क़दम चलने के बाद वह रेत में उलझ गया और गिर गया। सोने के टुकड़े इधर-उधर बिखर गये।

उसी वक़्त कार के स्टार्ट होने की आवाज़ आयी। उन्होंने पलटकर देखा तो कार तेज़ी से शहर की तरफ़ जा रही थी।

सेठ ने दौड़ती हुई कार पर एक-दो फ़ायर किये। गोपाल के हाथ में एक गोली लगी। लेकिन वह किसी-न-किसी तरह कार चलाता रहा।

सेठ ने अब फिर रंजीत की तरफ़ रिवाल्वर करके कहा, 'चलो, जल्दी करो—अभी तुम्हें किश्ती भी खेनी है। उठाओ ये सब !'

कार—

गोपाल कार को तेज़ी से चला रहा है।

कार पुलिस के एण्टी करेप्शन ब्रांच के पास आकर रुकती है।

गोपाल इन्सपैक्टर के दफ़्तर में तेज़ी से दाखिल होता है।

'इन्सपैक्टर साहब', गोपाल कहता है, 'मैं सोने की स्मगलिंग की खबर लाया हूँ।'

'लेकिन मुझे तो लगता है, आप किसी का ख़ून करके आये हैं', इन्सपैक्टर ने गोपाल के हाथ पर लगे हुए ख़ून को देखकर कहा, 'आइन्दा किसी का ख़ून करो तो पुलिस के पास आने से पहले हाथ तो धो लिया करो।'

अब गोपाल ने अपने हाथ पर लगे ख़ून के धब्बों को देखा।

'इन्सपैक्टर साहब मैंने किसी का ख़ून नहीं किया। किसी ने मेरा ख़ून करने की कोशिश की है—मगर वक़्त नहीं है—आइये मेरे साथ···।'

दोनों चल पड़े।

गहरे समन्दर में—

छोटी-सी किश्ती जा रही थी, रंजीत उसे खे रहा था।

खुफ़िया तरीक़े से मालती अपनी साड़ी का पल्लू फाड़ रही थी और उसे पानी में फेंक रही थी। कभी-कभार अँधेरे से फ़ायदा उठाकर वह रबड़ टायर या फ़्लोएट बॉय पानी में फेंक देती थी।

छोटी-सी किश्ती एक बड़े लांच के पास पहुँचती है।

मालती को उसके ऊपर धकेला गया।

फिर सोने की बोरियों को उसमें लादा गया।

पहली—

फिर दूसरी—

जब रंजीत तीसरी बोरी लांच में रख रहा था तो बाबू भाई ने धक्का देकर किश्ती को अलग कर दिया और फ़ौरन जेब से रिवाल्वर निकालकर उसे गोली मार दी।

रंजीत अब तक बोरी को पकड़े हुए था, डगमगाकर बोरी के साथ पानी में गिर गया।

लांच चलने के लिए थी लेकिन सेठ ने उसको ठहराने का हुक्म दिया, 'रोको ! रोको ! ठहरो ! वेवक़ूफ़ो ! पहले पानी में से मेरा सोना तो निकालो—जो जितना सोना निकालकर लायेगा मैं उसका आधा सोना उसे इनाम में दूंगा।'

कई सेलर पानी में कूद पड़ते हैं।

जैसे ही स्टीमर चलने को होता है, रोशनी का दायरा स्टीमर को अपने घेरे में ले लेता है और अँधेरे को चीरती हुई इन्सपैक्टर की गर्जदार आवाज़ सुनायी देती है—

'ठहर जाओ डाकुओ···।'

स्टीमर की सर्चलाइट चारों तरफ़ घूमती है। उसको बम्बई पुलिस की एक लांच नज़र आती है। इन्सपैक्टर एक लाउडस्पीकर से बोलता है। उसके पास ही गोपाल खड़ा है।

'अब तुम बच नहीं सकते', इन्सपैक्टर कहता है, 'हथियार फेंक दो और अपने-आपको क़ानून के हवाले कर दो।'

सेठ बाबू भाई आपे से बाहर होकर बोला, 'ये सब उस गोपाल का किया-धरा है', उसने कानाफूसी के अन्दाज़ में कहा, 'याद रखो—इस बोट में एक लड़की भी है—देखो उसे अच्छी तरह से !'

उसने अपनी सर्चलाइट को ऑफ़ कर दिया ताकि लांच की रोशनी स्टीमर के डैक पर पड़े—फिर मालती को रोशनी के दायरे में धकेल दिया।

गोपाल ने मालती को देखा—वह मजबूर हो गया।

अव सेठ की आवाज़ आयी, 'इस बोट में काफ़ी डायनेमाइट हैं। अगर तुमने आगे बढ़ने की कोशिश की तो पूरे स्टीमर को उड़ा दिया जायेगा··· और साथ में लड़की को भी···।'

पुलिस वेबस हो गयी।

स्टीमर ने हरकत करनी शुरू की।

सेठ के हाथ में पिस्तौल था जिसका निशाना मालती की तरफ़ था।

जव स्टीमर घूमा तो गोपाल ने इन्सपैक्टर से कहा, 'इन्सपैक्टर साहव, आप अपनी वोट को यहीं रखिये। मैं उस स्टीमर को वापस लाता हूँ···।'

ख़ामोशी से वह पानी में कूद पड़ा। अँधेरे में तैरता हुआ वह मुड़े हुए स्टीमर की तरफ़ गया—स्टीमर के वरावर पहुँचकर अँधेरे में एक रस्सी का सहारा लेकर ऊपर चढ़ा।

स्टीमर अँधेरे में आगे बढ़ा।

सेठ ख़ुश हुआ और मालती को एक केबिन में धकेलकर सेलरों से वोला, 'शावाश वहादुरो—पियो—अव हम ख़तरे से वाहर निकल आये

सवने शराव पीनी शुरू कर दी।

मौक़े से फ़ायदा उठाकर गोपाल स्टीमर के डैक पर आ गया।

स्टीयरिंग व्हील के क़रीव निगरानी करते हुए एक सेलर को उसने शराव के नशे में धुत पाया।

गोपाल ने उसके मुक्का रसीद किया। सेलर गिरा। फिर उसने सेलर का कोट पहन लिया।

वेहोश सेलर को तारपोलीन के एक टुकड़े से ढक दिया और ख़ुद व्हील के पास खड़ा हो गया। आहिस्ता से उसको पलटाया कि कोई देख न सके।

एक वार सेठ भी, जो नशे में था, उस रास्ते से गुज़रा।

उस सेलर को देखा जो व्हील के पास ड्यूटी अंजाम दे रहा था।

उससे वोला, 'शावाश—सीधे चलाये चलो वहुत जल्द हम हिन्दुस्तान की समुद्री सीमा को पार कर जायेंगे।'

अपने केबिन में मालती मायूस होती जा रही थी।

दरवाज़ा बन्द था।

उसने पोर्ट होल खोला।

दब-दबाकर उसमें से बाहर निकल गयी और डैक के किनारे पर गयी। उछलते हुए गहरे पानी को देखा।

वह उसमें कूदकर अपनी ज़िन्दगी को ख़त्म कर देना चाहती थी मगर एक ताक़तवर हाथ ने उसको पकड़ लिया।

उसने अपने रक्षक को देखा तो धक् से रह गयी।

यह गोपाल था—उँगली के इशारे से उसने मालती से कहा कि वह ख़ामोश रहे।

उसको अपनी आँखों पर यक़ीन नहीं आया। वह सोचती है कि कहीं नज़र का धोखा तो नहीं। जब उसे यक़ीन हुआ कि यह हकीक़त है तो वह उससे लिपट गयी। उसकी बेचैनी ख़त्म हो गयी।

'ये लोग तुम्हें मार डालेंगे गोपाल!'

'तुम मुझे मिल गयीं—अब मैं मरने को तैयार हूँ!'

फिर उसने मालती के कानों में कानाफूसी के अन्दाज़ में कहा और आगे की तरफ़ इशारा करके बताया जहाँ सवेरे की एक हल्की-सी लकीर दिखायी दे रही थी।

'तैरना आता है?'

उसने सर हिलाया।

सेठ बाबू भाई नशे में धुत अभी तक सो रहा था। एक सेलर दौड़कर उसके पास आया।

'पुलिस! पुलिस!' वह चिल्लाया।

सेठ बाहर आया और स्टीमर को पुलिस की कई लांचों से घिरा हुआ देखा।

'सेठ बाबू भाई', इन्सपैक्टर की आवाज़ आयी, 'अपने-आपको क़ानून के हवाले कर दो।'

सेठ अब बिलकुल पागल हो गया।

वह चिल्लाया, 'क़ानून! कौन-सा क़ानून? जिसके पास सोना होता

है वह हर क़ानून से बड़ा होता है—मेरे पास इतना सोना है कि मैं तुम सबको ख़रीद सकता हूँ।'

फिर वह सेलर लोगों से कहता है—'जिसको भागना है भाग जाये—जिसको अपने-आपको पुलिस के हवाले करना हो कर दे—मैं इस स्टीमर को डायनेमाइट से उड़ाने वाला हूँ—मुझे मेरे सोने से कोई अलग नहीं कर सकेगा।'

सेलर्ज़ पानी में कूद पड़ते हैं—पानी में तैरना शुरू कर देते हैं।

सेठ चिल्लाया, 'मगर मैं अकेला नहीं मरूँगा, गोपाल—मालती भी मेरे साथ जा रही है!'

'नहीं काकाजी!' लांच पर नमूदार होते हुए मालती चिल्लायी, 'मैं यहाँ हूँ। अपनी जान मत दीजिये।'

'सेठ बाबू भाई', गोपाल चिल्लाया, 'सोना जान से ज़्यादा प्यारा नहीं है।'

'सोना मेरी जान से भी ज़्यादा प्यारा है—सोना ईमान है—सोना मेरा धर्म है।'

उसी वक़्त एक धमाका हुआ! स्टीमर आग की लपटों से जलकर राख हो गया।

हाथ में हाथ दिये—फूलों के हारों से लदे—नये शादी-शुदा गोपाल और मालती मज़दूरों की बस्ती में आये तो डौक मज़दूरों ने उनका भव्य स्वागत किया।

□□

Indian Institute of Advanced Study Library
64350
6-8-81

Library IIAS, Shimla
H 813.31 Ab 19 S
00064350